मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१२, अंक-०८ नवंबर २०२२ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ २८ मूल्य १००.०० रूपए

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

२६ नवंबर संविधान दिवस

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

१६ नवंबर २०२२ भारतीय इतिहास में रचा गया इतिहास सर्वोच्च अदालत के अधिवक्ता आए एकमंच पर, कहा जल्द ही भारत को Bharat ही बोला जाएगा

राज कुमार मित्तल

(अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष)

अंतर्राष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन

Mob : 9775791111/ 9775741114

18 R.N.Mukherjee Road, 2nd Floor, Kolkata- 700001 (West Bengal), BHARAT

Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

चित्र में 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन 'भारतीय संविधान में भारत' 'द इंडियन सोसायटी ऑफ इंटरनेशनल लॉ' में १६ नवंबर २०२२ को आयोजित कार्यक्रम में श्रोताओं को संबोधित करते हुए, साथ हैं सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ. आदिश कुमार अग्रवाला, श्रीमती जया राखेचा, मैं भारत हूँ फाउंडेशन के उत्तरांचल उपसभापति पूरण डावर, वरिष्ठ अधिवक्ता प्रवीण एच. पारेख, न्यायाधीश नरेंद्र कुमार जैन, सुशील कुमार जैन के साथ हैं मैं भारत हूँ फाउंडेशन की राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी

भारत को केवल Bharat ही बोला जाए INDIA नहीं अभियान के संचालक बिजय कुमार जैन जी

आप आगे बढ़े एक दिन पूरा विश्व आपके साथ होगा

१६ नवंबर २०२२ को दिल्ली स्थित सुप्रीम कोर्ट के प्रांगण में द इंडियन सोसायटी आफ इंटरनेशनल लॉ के सभागार में ऐतिहासिक कार्यक्रम की सफलता के लिए हार्दिक बधाईयां।

बिजय जी! एक दिन पूरा विश्व भारत को BHARAT ही कहेगा और

विश्व के मानचित्र Globe में INDIA की जगह भारत लिखा जाएगा

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

निवेदन

मैं भारत हूँ
mailgaylordgroup@gmail.com

गेलॉर्ड ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन्स

एवं

मैं भारत हूँ फाउंडेशन के समस्त पदाधिकारी व सदस्य

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को केवल भारत ही बोलेंगे

आज से इंडिया नहीं बोलेंगे

भारत नाम की आजादी के लिए

India को संविधान से हटाने के लिए

मुक्त हस्त आर्थिक सहयोग करें व सरकारी नियमों के अनुसार रियायत प्राप्त करें

हर महीने होने वाले खर्चों के लिए आप भी दान दाता बन सकते हैं

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

80G व 12A भारतीय आयकर नियमानुसार पंजीकृत

हमारा बँक खाता क्र.

HDFC BANK SAVING BANK A/C No. 50100479479181

IFSC CODE : HDFC0000592 BRANCH NAME : MAROL, ANDHERI EAST, MUMBAI, BHARAT

निवेदक

मैं भारत हूँ फाउंडेशन परिवार

(अंतर्राष्ट्रीय संस्थान)

अगला विशेषांक दिसंबर २०२२

भारत की विश्व प्रसिद्ध नगरी सूरत (भाग २)

भारत की विश्व प्रसिद्ध नगरी 'सूरत' का परिचय मात्र १ अंक में करना मुश्किल ही नहीं नामुमकीन है।
निवेदन किया जाता है कि जो कुछ भी सूरत का इतिहास या वर्तमान की बातें सूरत भाग १ के प्रकाशन में छूट गयी हैं, वह हमें भिजवाएं ताकि 'सूरत' का इतिहास भाग २ में प्रकाशित किया जा सके। संपर्क करें ०२२-२८५०९९९९
'भारत को 'भारत' ही बोलें INDIA नहीं' - संपादक

Tariff Card

Monthly Magazine
Main Bharat Hun

Reader Ship
17,000

Readers
Politician /

Release Date
21th day of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19 cm x 24 cm

Print in Colour
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2018

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/-*	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/-*	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/-*	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-*	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-*	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-*	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-*	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-*	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-*	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-*	+ 5% GST

*** Per Insertion**

हिंदी भाषा शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का माध्यम है- बिजय कुमार जैन

मैं भारत हूँ

वर्ष -१२, अंक ०८, नवंबर २०२२

वार्षिक मुल्य
रु.१११११/-
१२ अंकों का

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com

अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

अंतरराष्ट्रीय संगठन मैं भारत हूँ फाउंडेशन द्वारा ऐतिहासिक कार्यक्रम का आयोजन

विगत कई वर्षों से लगातार 'भारत को केवल भारत ही बोला जाए INDIA नहीं' विश्व के मानचित्र (Globe) से INDIA को विलुप्त करवाने के लिए भारत सरकार से निवेदन करते हुए १६ नवंबर २०२२ को दिल्ली स्थित 'द इंडियन सोसायटी ऑफ इंटरनेशनल लॉ' के सभागार में ऐतिहासिक कार्यक्रम का आयोजन, विश्व में फैले 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के पदाधिकारियों ने किया, जिसमें भारतीय संविधान के प्रबुद्ध अधिवक्ताओं की उपस्थिति रही, जिसमें विशेषकर सुप्रिम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रवीण एच. पारेख प्रधानवक्ता के रूप में उपस्थित मंचासिन थे, जिनका साथ दे रहे थे न्यायाधीश नरेंद्र जैन, अधिवक्ता डॉ. आदीश अग्रवाला, सुशील कुमार जैन, जया राखेचा के साथ आगरा से 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के उत्तरांचल उपसभापति पूरण डावर, पूर्वांचल उपसभापति सुशीला पुगलिया कोलकाता, उत्तरांचल उप संयुक्तमंत्री कांता माहेश्वरी आगरा, पश्चिमांचल उप सभापति सुभाष चंद्र काबरा अजमेर, पश्चिमांचल उप सभापति आनंद राठी कोटा, राजरानी काबरा कोलकाता, राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी कोलकाता, अरूण काबरा जयपुर, अधिवक्ता अजीत जैन, नवनीत दुगड़, पूर्वी दिल्ली प्रभारी अवधेश गुप्ता, रोहिणी प्रभारी जिनेश जैन, आर के पूरम प्रभारी सरला जैन, सतीश काबरा कोलकाता, शांतिलाल पटावरी अध्यक्ष अणुव्रत ट्रस्ट दिल्ली, रिठाला प्रभारी योगी माथुर, पत्रकार पवन जुनेजा, भारत माँ का मंदिर दिल्ली में निर्माणकर्ता अरविंद गुप्ता, अधिवक्ता समाजसेवी रवि शर्मा, समाज सेविका राजकुमारी हुड्डा, तेरापंथ महिला मंडल दिल्ली की पदाधिकारी महिलाओं आदि-आदि के साथ कई-कई अधिवक्ताओं ने कहा कि प्राचीनतम 'भारत' को केवल भारत ही कहा जाना चाहिए इंडिया तो ब्रिटिशर्स द्वारा थोपा गया नाम है।

उपस्थित सभी कानूनवेत्ताओं ने सभागार में उपस्थित श्रोताओं को यह भी जानकारी दी कि हम सभी 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की सोच व कार्य से प्रभावित हुए हैं, हमें जो भी जिम्मेदारी दी जाएगी हम उस कार्य को कानूनी तौर पर निभाएंगे, ताकि हमारा देश विश्व में 'भारत' ही कहलाए साथ यह भी कहा कि आप सभी को भारत सरकार से लगातार संपर्क भी करते रहना चाहिए ताकि भारत की प्रथम महत्वपूर्ण संस्थान लोकसभा व राज्यसभा में यह प्रस्ताव पारित किया जा सके और हमारे अति प्राचीनतम देश भारत को विश्व में केवल 'भारत' ही कहा जा सके।

मैं भारत हूं फाउंडेशन की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमती निशा लड्ढा कोलकाता कार्यक्रम की मंच संचालिका ने कहा कि हम भारतीय आंदोलन में विश्वास नहीं करते, भारतीय संस्कृति के अनुसार हम इंतजार व निवेदन पर ही विश्वास करते हैं। एक न एक दिन भारत सरकार हमारे ऐतिहासिक प्रतिवेदन पर जरूर ध्यान देगी और विश्व में भारत को 'भारत' ही कहा जा सकेगा साथ यह भी कहा कि

अकेला चला बिजय तू एक दिन सारा जहाँ तेरे साथ होगा
तेरी इच्छा का मनोबल बढेगा और विश्व
भारत को BHARAT ही कहेगा...

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि-भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन ने इतिहास रचा सर्वोच्च अदालत के अधिवक्ता आए एकमंच पर

द इंडियन सोसाइटी ऑफ इंटरनेशनल लॉ (ISIL), वी.के. मेनन भवन, ९, भगवान दास मार्ग, दिल्ली

नयी दिल्ली: भारत की सर्वोच्च अदालत के अधिवक्ता जब १६ नवंबर २०२२ को सुप्रीम कोर्ट के ही प्रांगण में स्थित 'द इंडियन सोसायटी ऑफ इंटरनेशनल लॉ' के सभागार में एकमंच पर उपस्थित हुए और एक ही नारा गूंजा कि आज से हम अपने प्राचीनतम भारत को 'भारत' ही बोलेंगे, इंडिया नहीं, इंडिया तो ब्रिटिशर्स ने हम पर थोपा था, आज ब्रिटिशर्स भारत छोड़ गए हैं, अब हम अपने देश को भारत ही बोलेंगे, लिखेंगे, यह नारा तब लगा जब सुप्रिम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रवीण एच. पारेख प्रधानवक्ता के रूप में उपस्थित मंचासिन थे, जिनका साथ दे रहे थे न्यायाधीश नरेंद्र जैन, अधिवक्ता डॉ. आदीश अग्रवाल, सुशील कुमार जैन, जया राखेचा के साथ आगरा से 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के उत्तरांचल उपसभापति पूरण डावर, पूर्वांचल उपसभापति सुशीला पुगलिया कोलकाता, उत्तरांचल उप संयुक्तमंत्री कांता माहेश्वरी आगरा, पश्चिमांचल उप सभापति सुभाष चंद्र काबरा अजमेर, पश्चिमांचल उप सभापति आनंद राठी कोटा, राजरानी काबरा कोलकाता मार्गदर्शक आदि-आदि के साथ कई-कई अधिवक्ता ने कहा कि

अकेला चला बिजय तू एक दिन सारा जहाँ तेरे साथ होगा
तेरी इच्छा का मनोबल बढेगा और विश्व
भारत को BHARAT ही कहेगा...

ऐतिहासिक कार्यक्रम की संरचना 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन मुंबई ने की, साथ दिया राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी कोलकाता, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा कोलकाता, अरूण काबरा जयपुर, अधिवक्ता अजीत जैन, नवनीत दुगड़, पूर्वी दिल्ली प्रभारी अवधेश गुप्ता, रोहिणी प्रभारी जिनेश जैन, आर के पूरम प्रभारी सरला जैन, सतीश काबरा कोलकाता, शांतिलाल पटावरी अध्यक्ष अणुव्रत ट्रस्ट दिल्ली, रिठाला प्रभारी योगी माथुर, पत्रकार पवन जुनेजा, भारत माँ का मंदिर दिल्ली में निर्माणकर्ता अरविंद गुप्ता, अधिवक्ता समाजसेवी रवि शर्मा, समाज सेविका राजकुमारी हुड्डा, तेरापंथ महिला मंडल दिल्ली की पदाधिकारी महिलाओं आदि-आदि ने मिलकर 'जय भारत' के नारे से सभागार गुंजायमान कर दिया। **-मैंभाहूँ**

जन-जन की आशा है हिंदी, भारत की भाषा है हिंदी-बिजय कुमार जैन

देवनागरी भारतीय भाषाओं के लिए सर्वोत्तम लिपि है - बिजय कुमार जैन

भारत अर्थात् निरंतर उजाले की ओर इसलिए भारत को भारत ही बोला जाए

'गायन्ति देवाः किल गीतवानी
धन्यासुते भारत भूमि भागे'

देवता भी स्वर्ग में यही गान करते हैं

धन्य है वे लोग जो भारतभूमि में जन्म लिए हैं। भारतभूमि स्वर्ग से भी बढकर है क्योंकि यहां स्वर्ग से अतिरिक्त मोक्ष की साधना की जाती है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाना चाहिए क्योंकि संज्ञा एक एवं क्रिया अनेक होती है, उसी प्रकार 'भारत' एक संज्ञा है जो कि केवल एक ही हो सकती है तो भारत का नाम India क्यों होना चाहिए? 'भारत' की उत्पत्ति तो प्राचीनकाल में ही हो गई थी। 'भारत' का नाम रामायण एवं महाभारत के समय से ही चला आ रहा है फिर क्यों उसे हमने India नाम दिया?

हम जानते हैं अंग्रेजों के आगमन से भारत का नाम India पड़ा, परंतु आज हम स्वतंत्र है तो क्यों भारत को India कहें?

यदि हम भारत के इतिहास को पढ़ें तो ९००० वर्ष पूर्व भारतीय सिन्धु नदी के पश्चिमी हिस्से की तरफ बसे हुए थे। ऋगवेद की स्थापना भी इसी काल में हुई थी, इसके पश्चात चार प्रमुख समुदाय हिंदु, बौद्ध, जैन और सिख का जन्म हुआ। ब्रिटिश इंडिया कम्पनी ने १८, १९वीं सदी में भारत में प्रवेश किया। १८५७ में विफल विद्रोह के बाद भारत के प्रशासन का भार ब्रिटिश सरकार ने अपने ऊपर ले लिया।

अंग्रेजों ने India के रूप में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना की। महात्मा गांधी के नेतृत्व में १५ अगस्त १९४७ को भारत ने आजादी पाई। १९५० में भारतीय संविधान लागू हुआ और लोकतांत्रिक भारतीय गणतंत्र की स्थापना हुई। आज भारत २९ राज्यों एवं ७ संघ शासित प्रदेशों में गठित है। १९९१ के बाद भारत ने उदारीकरण और वैश्वीकरण की नयी नितीयों के आधार पर सार्थक, आर्थिक और सामाजिक प्रगति की। ज्ञात हो कि India का कोई अर्थ नहीं, परंतु अर्थहीन शब्द का प्रयोग गर्व से लिया जा रहा है। India शब्द का अर्थ घिसा-पिटा हुआ, जो कि हम भारतवासियों के लिए उपयुक्त नहीं है। 'भारत' शब्द ही अपने आप में सम्मान पुर्वक व आदरपूर्वक है, जिसका अर्थ स्पष्ट है भारत अर्थात निरंतर उजाले की ओर...

हम जन्म लेते हैं हमारी माँ एक ही होती है। हम माता को माँ बोलते हैं, उसी प्रकार उसी माँ के कई नाम होते हैं जैसे काकी, बुआ, मामी, मासी आदि परंतु नाम तो एक ही है माँ! जो कि हमारी भारतीय संस्कृति को दर्शाता है। 'भारत' ही एक ऐसा देश है जहां संविधान ने २२ भाषा को मान्यता दी है परंतु हमारे भारत में १२१ भाषाएं बोली जाती हैं एवं समझी जाती हैं। विभिन्न क्षेत्रों में विविधता के अनुसार नागरिक होते हैं जो कि विभिन्न प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं। भारत में बोली जाने वाली एक ही भाषा है जो सभी जगह सर्वोपरि है, जिसे आसानी से, सरलता से समझा व बोला जाता है। 'हिंदी' हमारी राष्ट्रभाषा होनी चाहिए, जिसका जन्म देवनागरि लिपी से हुआ है। हिंदी भाषा किसी का अपमान नहीं करती, अपितु सम्मान करती है। हम किसी को Hello नहीं बोलकर नमस्ते सम्बोधित करेंगे तो हमारा मान और भी बढ़ जाता है। हमारे देश के श्रेष्ठ दिग्गज जैसे स्वामी विवेकानन्द, सुभाषचंन्द्र बोस आदि ने नमस्ते का बहुत ही सुंदर परिचय दिया है जो कि विदेशों में आज भी स्मरणीय है।

हम क्यों अपने माता-पिता को मम्मी व डेडी बोलकर संबोधित करते हैं। मम्मी का अर्थ डेड का अर्थ मौत, यानी मरा हुआ, हम अपनी माता को माँ क्यों नहीं बोलते, क्यों हम अंग्रेजी शब्दों को प्रयोग करते हैं? क्यों अपने भारत को 'भारत' नहीं बोलते।

पहल करें India को India ना बोलें।

मातृभूमि को अपना नाम फिर से भारत को 'भारत' ही बोला जाए कहने के लिए 'जिनागम' पत्रिका के वरिष्ठ सम्पादक एवं पत्रकार बिजय कुमार जी जैन द्वारा एक सफल प्रयास किया जा रहा है जो कि बहुत ही सराहनीय है। जिसे सफलता मिलकर रहेगी क्योंकि हम भारतीय बिजय जी के साथ हैं।

-निकिता सुंठवाल
हैदराबाद

भारत की मानसिक उन्नति भली-भाँति तभी हो सकती है, जय शिक्षा का माध्यम 'हिन्दी' हो - पं. रामनारायण मिश्र

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि
मैं भारत हूँ

न्यायाधिश नरेंद्र कुमार जैन
चेयरमैन नेशनल कमिशन फॉर माइनॉरिटी एजुकेशनल इंस्टीट्यूट दिल्ली

नरेंद्र जी ने १९७१ में स्नातक की शिक्षा प्राप्त की और १९७४ में राजस्थान विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री प्राप्त की। १९७४ से १९९२ तक टोंक और जयपुर से अधिवक्ता के रूप में अपनी प्रैक्टिस प्रारंभ की, विभिन्न पदों पर प्रगति करते हुए आज जस्टिस के पद पर सेवारत हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। राजस्थान स्टेट चाइल्ड वेलफेयर कमिटी व जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड के चेयरमैन रहे। नेशनल कमीशन फॉर माइनॉरिटी एजुकेशन इंस्टीट्यूट के चेयरमैन के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

नरेंद्र जी १६ नवंबर को सर्वोच्च न्यायालय के प्रांगण में 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' द्वारा आयोजित 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संदर्भ में अपने विचार देते हुए कहते हैं कि आयोजित कार्यक्रम बहुत ही अच्छा लगा और यह बहुत ही अच्छी मुहिम है, किसी भी नाम का अनुवाद नहीं होता है चाहे वह किसी भी भाषा में बोला जाए तो भारत की अंग्रेजी 'इंडिया' क्यों कहा जाता है, जब हमारा देश आजाद हुआ तो उस समय परिस्थितियां जो भी रही हों, आर्टिकल १ में 'इंडिया दैट इज भारत लिख दिया गया' पर आज परिस्थितियां अलग हैं, इसे संशोधन किया जाना चाहिए। सीनियर एडवोकेट प्रवीण पारीक द्वारा इस विषय पर विचार विमर्श किया गया, इसके लिए सरकार से निवेदन किया जाना चाहिए, क्योंकि सरकार द्वारा ही यह प्रयास सफल हो सकता है, जिस तरह उन्होंने दिल्ली स्थित राजपथ का नाम कर्तव्यपथ कर दिया, इंडिया गेट के पीछे जॉर्ज पंचम के चरण चिन्ह थे जिसे हटाकर सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा लगा दी गई। वर्तमान में सरकार द्वारा हमारे देश की संस्कृति व महानायकों का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, इसी तरह भारत के संविधान से इंडिया शब्द हटाकर सिर्फ और सिर्फ भारत शब्द लिखा जाए, विदेशों में हमारी पहचान इंडिया से है पर यदि संविधान में संशोधन के उपरांत हमारी प्रशासनिक व्यवस्था व न्यायालयों में इंडिया की जगह 'भारत' नाम का उपयोग किया जाएगा तो अवश्य ही विदेशों में भी हमारे देश की पहचान 'भारत' से ही होगी, यह मुहिम अवश्य ही सफल हो सकती है।

इस मुहिम को सफल बनाने के लिए हमें भारतीय सांसदों से बात करनी होगी और उनके द्वारा इस बात को संसद में रखना होगा, गुलामी का प्रतिक इंडिया नाम को विलुप्त किया जा सके। होम मिनिस्टर, लॉ मिनिस्टर, प्राइम मिनिस्टर के सम्मुख प्रतिवेदन प्रस्तुत करना होगा, तभी सफल होगा।

इस अभियान के प्रणेता व मैं भारत हूँ फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन जी के विचारों व व्यक्तित्व से में काफी प्रभावित हुआ, जिस तरह किसी के छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ा रंग लाया जा सकता है और उसका नाम इतिहास में दर्ज हो जाता है उसी तरह बिजय जी का यह प्रयास भी एक न एक दिन अवश्य रंग लायेगा, इस अभियान में उनका भी नाम इतिहास में लिखा जाएगा। जय भारत!

डॉ. आदीश सी. अग्रवाला, वरिष्ठ अधिवक्ता
अध्यक्ष, इंटरनेशनल कॉउन्सिल ऑफ ज्युरिस्ट, लंदन एवं ऑल इंडिया बार एसोसिएशन
मो : ९९५८१७७९०४

डॉ. आदीश अग्रवाला जी स्वर्ण पदक विजेता, कानून में पीएचडी और मनोनीत वरिष्ठ अधिवक्ता हैं। एक गतिशील उच्च प्रोफाइल वकील, लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता है। इंटरनेशनल कॉउन्सिल ऑफ ज्युरिस्ट, लंदन, इंटरनेशनल कमीशन ऑफ राइटर्स, जिनेवा, नेशनल सिटीजन्स कमेटी एवं ऑल इंडिया बार एसोसिएशन के अध्यक्ष, इंडियन कॉउन्सिल ऑफ ज्युरिस्ट के कनविनियर एवं आल इंडिया सीनियर एड्वोकेट्स एसोसिएशन के सेक्रेटरी जनरल हैं। आप 'भारत का संविधान' एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की जीवनी के लेखक हैं। बार काउंसिल ऑफ इंडिया एवं सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष, बार काउंसिल ऑफ दिल्ली के चेयरमैन एवं सुप्रीम कोर्ट में हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश एवं तमिलनाडु सरकार के एडिशनल एडवोकेट जनरल रहे हैं।

१६ नवंबर को सुप्रीम कोर्ट के प्रांगण में हुए ऐतिहासिक कार्यक्रम में आपने कहा कि भारत को प्रत्येक भाषा में केवल 'भारत' ही बोला जाए, 'इंडिया' नहीं। इस विषय के संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छी सोच है कि अपने देश का नाम केवल भारत ही रहना चाहिए, क्योंकि यही नाम आदिकाल से चला आ रहा है, यही हमारे देश का वास्तविक नाम है और यह हमारी संस्कृति व भारतीयता से जुड़ा है इसीलिए अपने देश का नाम प्रत्येक भाषा में केवल 'भारत' होना चाहिए। अंग्रेजी में भी भारत ही रहना चाहिए, 'इंडिया' नहीं।

शेष पृष्ठ १० पर...

पृष्ठ ९ से... भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए 'इंडिया' नहीं, अभियान की सफलता के लिए आपका कहना है कि यह प्रयास भारत के माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के कार्यकाल में ही संभव हो सकता है, इसके लिए माननीय प्रधानमंत्री व माननीय श्री अमित शाह जी को इस अभियान से अवगत कराना होगा, क्योंकि माननीय मोदी जी वर्तमान में भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु कई कदम उठाएं हैं जिसमें अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भी एक प्रमुख मुद्दा रहा है, मोदी जी ने इस असंभव कार्य को भी संभव कर दिखाया। इसलिए यह भी कार्य मोदी जी के हाथों संभव हो सकता है।

२६ नवंबर को भारतीय संविधान दिवस के रुप में मनाया जाता है। 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के संस्थापक बिजय कुमार जैन जी का अभियान और विचार भारत को भारत ही बोला जाए इंडिया नहीं, बहुत ही उत्तम है और उनसे मैं काफी प्रभावित हुआ हूं क्योंकि वह इस अभियान के लिए अपना सम्पूर्ण समय और पैसा दोनों ही लगा रहे हैं जो एक उत्तम कार्य है। जय भारत!

एडवोकेट जया राखेचा
अधिवक्ता-हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट
दिल्ली निवासी

१६ नवंबर २०२२ को दिल्ली के सुप्रीम कोर्ट के प्रांगण में 'भारत को भारत ही बोला जाए' अभियान के तहत कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति रही, कार्यक्रम के संदर्भ में आपका कहना है कि वास्तव में यह हम भारतीयों की मांग है कि अपने देश का एक ही नाम हो 'भारत' और यह कार्य बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था, पर 'जब जागो तभी सवेरा' और इस कार्य का बीड़ा 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के अध्यक्ष बिजय कुमार जैन जी ने उठाया है, यह बहुत ही अच्छी मुहिम है, विश्व पटल पर अर्थात Globe में हमारा देश INDIA के बजाय BHARAT नाम से उल्लेखित हो, क्योंकि हमारा देश आर्यवर्त, भारतवर्ष जैसे प्राचीन नामों से हमेशा से ही जाना जाता रहा है और अपनी पुरानी संस्कृति और पहचान को बढ़ावा देने के लिए अपने देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत'।

हमारे देश का नाम भारत और इंडिया क्यों? इंडिया शब्द का अर्थ कुछ नहीं होता, 'भारत' ही हमारे देश का नाम रहना चाहिए।

विश्व में भी हमारे देश को 'भारत' नाम से ही जाना जाए इसके लिए प्रयास करना चाहिए, इस अभियान को सफल बनाने के लिए जन जागरण के साथ जनसंपर्क व जन आंदोलन की आवश्यकता है, तभी यह प्रयास धीरे-धीरे सफलता की ओर बढ़ेगा, जिस तरह श्रीलंका का पहले नाम सिलोन हुआ करता था, पर १९७२ के बाद लंका कर दिया गया और तत्पश्चात १९७८ इसे श्रीलंका नाम दिया गया, हर कार्य संभव हो सकता है बस प्रयास की आवश्यकता होती है।

संक्षिप्त परिचय

● एल.एल.बी. - १९८५ ● आईवीएस दिल्ली वन सेंटर भक्तामर हीलर, भक्तामर में पीएचडी ● दिल्ली के एडवोकेट बार काउंसिल - २००० से
● सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन, दिल्ली -२००२ से सदस्य ● जोनल अध्यक्ष- तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम लगातार चार बार
● १२ अगस्त २००८ को आयोजित चौथे राष्ट्रीय कानूनी सम्मेलन 'लेकॉन-२०१८' में प्रतिभागी
● 'भारतीय संविधान के निर्देशक और सिद्धांत पर संगोष्ठी में प्रतिभागी समावेशी विकास' का उद्घाटन माननीय श्री प्रणब मुखर्जी, राष्ट्रपति द्वारा किया गया। २८ सितंबर २०१३ को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में ● अणुव्रत समिति कार्यकारिणी सदस्या ● तेरापंथ महामंडल संगठन की सलाहकार।

संवैधानिक रूप से भी इस कार्य को संभव कराना होगा और इसके लिए भारतीय संसद में इसके लिए प्रस्ताव पारित कराना होगा, वर्तमान की मोदी सरकार द्वारा इसे संभव किया जा सकता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी भारत की प्राचीन संस्कृति के प्रचार-प्रसार को महत्व देते हैं। विश्व पटल में 'भारत' को एक प्रमुख स्थान मोदी सरकार के कार्यकाल में ही संभव हुआ है, मुझे विश्वास भी है कि विश्व पटल पर इंडिया का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' जल्द ही होगा।

२६ नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है, पहले लोगों को इसके बारे में जानकारी ही नहीं थी पर आज मीडिया के माध्यम से लोगों में जागृति आई है और पूरा 'भारत' इस दिवस को बड़े ही उत्साह से मनाता है।

'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के संस्थापक बिजय कुमार जैन जी ने अपने नाम के अनुसार ही अपने कार्य को भी सार्थक करने वाले हैं, जिन्होंने इस अभियान के लिए दिल्ली आकर रहे और यह उन्हीं के प्रयासों का ही स्वरूप है कि सर्वोच्च न्यायालय के प्रांगण में जहां कोई नहीं जा सकता, उनके द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया जो कि बहुत ही सराहनीय रहा। जय भारत!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

एक भाषा की वजह से एकता को सफलता मिल सकती है, वह हिन्दी ही है - बिजय कुमार जैन

'पंजाब केसरी' लाला लाजपत राय की जीवनी

लाला लाजपत राय ने भारत को आजाद करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लाला लाजपत राय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के तीन प्रमुख नायकों 'लाल-पाल-बाल' में से एक थे, इस तिकड़ी के मशहूर लाला लाजपत राय न सिर्फ एक सच्चे देशभक्त, हिम्मती स्वतंत्रता सेनानी और एक अच्छे नेता थे बल्कि वे एक अच्छे लेखक, वकील, समाज-सुधारक और आर्य समाजी भी थे।

'लाल-पाल-बाल'

बता दें कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महानायक लाला लाजपत राय की छवि प्रमुख रुप से एक राष्ट्रवादी नेता के रूप में रही। लाला लाजपत राय ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ शक्तिशाली भाषण देकर न सिर्फ ब्रिटिश शासकों के इरादों को पस्त कर दिया बल्कि उनकी देश के प्रति अटूट देशभक्ति की भावना की वजह से उन्हें 'पंजाब केसरी' या 'पंजाब का शेर' भी कहा जाता था।

लाला लाजपत राय की जीवनी –

पूरा नाम (Name)	श्री लाला लाजपत राधाकृष्ण राय जी
जन्म (BirthDay)	२८ जनवरी १८६५
जन्म स्थान (Birthplace)	धुड़ीके गाँव, पंजाब, बर्तानवी भारत
पिता (Father)	श्री राधाकृष्ण जी
माता (Mother)	श्रीमती गुलाब देवी जी
शिक्षा (Education)	१८८० में कलकत्ता और पंजाब विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण, १८८६ में कानून की उपाधि ली
संगठन	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, आर्य समाज, हिन्दू महासभा
आन्दोलन	भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन
स्थापित विद्यालय	१८८३ में अपने भाईयों और मित्रों (हंसराज और गुरुदत्त) के साथ डी.ए.वी. (दयानन्द अंग्लों विद्यालय) की स्थापना, पंजाब नेशनल कॉलेज लाहौर की स्थापना
मृत्यु (Death)	१७ नवम्बर १९२८
मृत्यु स्थान (Deathplace)	लाहौर (पाकिस्तान)
उपाधियाँ (Awards)	शेर-ए-पंजाब, पंजाब केसरी
रचनाएँ	पंजाब केसरी', 'यंग इण्डिया', 'भारत का इंग्लैंड पर ऋण', 'भारत के लिए आत्मनिर्णय', 'तरुण भारत'।

लाला लाजपत राय का प्रारंभिक जीवन –

शेर-ए पंजाब की उपाधि से सम्मानित और भारत के महान लेखक लाला लाजपत राय पंजाब के धुड़ीके गांव के एक साधारण से परिवार में जन्मे थे। पिता का नाम लाला राधाकृष्ण था जो कि अग्रवाल (वैश्य) यानि की बनिया समुदाय से संबंधित थे और वे एक अच्छे अध्यापक भी थे। उन्हें उर्दू और फ़ारसी की अच्छी जानकारी थी।

आपकी माता जी का नाम गुलाब देवी था जो कि सिक्ख परिवार से वास्ता रखती थी। आप एक साधारण और धार्मिक महिला थी, जिन्होंने अपने बच्चों में भी धर्म-कर्म की भावना को प्रेरित किया। वास्तव में उनके पारिवारिक परिवेश ने ही आपको देशभक्ति का काम करने की प्रेरणा दी थी।

आजादी के महान नायक लाला लाजपत राय की शिक्षा –

लाला लाजपत राय जी के पिता सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक थे, इसलिए लाला जी की शुरुआती शिक्षा इसी स्कूल से शुरु हुई। आप बचपन से ही पढ़ने में काफी होशियार थे, एक मेधावी छात्र थे। अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद १८८० में कानून की पढ़ाई करने के लिए लाहौर के सरकारी कॉलेज में प्रवेश ले लिया और अपनी कानून की पढ़ाई पूरी की।

इसके बाद आप एक बेहतरीन वकील भी बने, कुछ समय तक वकालत भी की लेकिन लाला लाजपत राय का मन वकालत करने में नहीं टिका, अंग्रेजों की कानून व्यवस्था के खिलाफ आपके मन में क्रोध पैदा हो गया और बैंकिंग की तरफ रूख किया।

पीएनबी और लक्ष्मी बीमा कंपनी की स्थापना –

इसके बाद भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय ने राष्ट्रीय कांग्रेस के १८८८ और १८८९ के वार्षिक सत्रों के दौरान एक प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया और साल १८९२ में उच्च न्यायालय में प्रैक्टिस करने के लिए लाहौर चले गए जहां उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक और लक्ष्मी बीमा कंपनी की नींव रखी।

लाला लाजपत राय के निष्पक्ष स्वभाव की वजह से ही उन्हें हिसार मुन्सिपैल्टी की सदस्यता मिली, जिसके बाद वो सेक्रेटरी भी बन गए। आपको बता दें कि बाल गंगाधर तिलक के बाद आप उन शुरुआती नेताओं में से एक थे जिन्होंने पूर्ण स्वराज की मांग की थी। लाला लाजपत राय **शेष पृष्ठ १२ पर...**

पृष्ठ ११ से ... पंजाब के सबसे लोकप्रिय नेता बन कर उभरे।

लाला लाजपत राय का आर्य समाज में प्रवेश

आजादी के महानायक लाला लाजपत राय साल १८८२ में पहली बार आर्य समाज के लाहौर के वार्षिक उत्सव में शामिल हुए, इस सम्मेलन से इतने प्रभावित हुए कि आपने आर्य समाजी बनने का फैसला ले लिया।

वहीं उस समय आर्य समाज हिन्दू समाज में फैली कुरीतियों को धार्मिक अंधविश्वासों के खिलाफ था, उस दौरान लाल लाजपत राय ने लोकप्रिय जनमानस के खिलाफ खड़े होने का साहस किया और आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती के साथ मिलकर आर्य समाज के आंदोलन को आगे बढ़ाने में अपना भरपूर सहयोग दिया।

बता दें कि यह उस दौर की बात है जब आर्य समाजियों को धर्मविरोधी समझा जाता था, लेकिन लाला लाजपत राय जी ने इसकी बिल्कुल भी फिक्र नहीं की और आर्य समाज को अपना सहयोग दिया और निरंतर प्रयास करते रहे, उनकी कोशिशों से ही आर्य समाज पंजाब में भी मशहूर हो गया।

आर्य समाज का हिस्सा बनने के बाद लाला लाजपत राय की ख्याति दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही थी, यहां तक कि आर्य समाज में जो भी विशेष सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है उन सभी का नेतृत्व लाला लाजपत राय करते थे।

यहां तक की लाला लाजपत राय को राजपूताना और संयुक्त प्रान्त में जाने वाले शिष्टमंडलों के लिए चुना गया। जिसके बाद भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय शिष्टमंडलों में मुख्य सदस्य के रूप में मेरठ, अजमेर, फर्रुखाबाद आदि स्थानों पर गए और अपने भाषणों से लोगों के दिल में अमिट छाप छोड़ी।

बता दें कि हर कोई लाला लाजपत राय जी के भाषण सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाता था, वहीं इस दौरान महान राजनीतिज्ञ राय जी ने भी आर्य समाजियों से मुलाकात की और इस बात का अंदाजा लगाया कि कैसे एक छोटी सी संस्था का इतनी तेजी से विकास हो रहा है और यह संस्था किस तरह लोगों के बीच अपना प्रभाव छोड़ रही है।

लाला लाजपत राय जी ने शिक्षा के क्षेत्र में भी कई महत्वपूर्ण काम किए, बता दें कि इस दौरान आर्य समाज ने दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालयों की शुरुआत की, जिसके प्रचार-प्रसार के लिए लाला लाजपत राय जी ने हर संभव कोशिश की। वहीं जब स्वामी दयानंद का साल १८८३ में निधन हो गया तो आर्य समाज के द्वारा एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें यह फैसला लिया गया था कि स्वामी दयानंद के नाम पर एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाए, जिसमें वैदिक साहित्य, संस्कृति और हिन्दी की उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेज़ी और पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान में भी छात्रों को शिक्षा दी जाए इसी तर्ज पर इस स्कूल की स्थापना की गई, जिसमें लाला लाजपत राय जी ने अपना महत्पूर्ण योगदान दिया।

आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता होने के नाते आपने 'दयानंद कॉलेज' के लिए कोष इकट्ठा करने का भी काम किया और इसका जमकर प्रचार-प्रसार किया गया।

इसके अलावा भारत की आजादी के महानायक लाला लाजपत राय ने लाहौर के डीएवी कॉलेज की भी स्थापना में भी अपना सहयोग दिया, अपने अथक प्रयास से इस कॉलेज को उस समय के भारत के सर्वश्रेष्ठ शिक्षा के केन्द्र में बदल दिया, वहीं यह कॉलेज उन युवाओं के लिए वरदान साबित हुआ।

बता दें कि लाला लाजपत राय की आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद और उनके कामों के प्रति अटूट निष्ठा थी। स्वामी जी के निधन के बाद आर्य समाज के कार्यों को पूरा करने के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया था। हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष, प्राचीन और आधुनिक शिक्षा पद्धति में समन्वय, हिन्दी भाषा की श्रेष्ठता और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आर-पार की लड़ाई आर्य समाज से मिले संस्कारों के ही परिणाम थे।

कांग्रेस के कार्यकर्ता के रूप में लाला लाजपत राय

भारत के स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय जब हिसार में वकालत करते थे, उसी समय से उन्होंने कांग्रेस की बैठकों में भी हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। साल १८८५ में जब कांग्रेस का पहला अधिवेशन मुंबई में हुआ था उस समय लाला लाजपत राय बड़े उत्साह के साथ इस नए आंदोलन को देखना शुरु कर दिया था।

इसके बाद १८८८ में जब अली मुहम्मद भीम जी कांग्रेस की तरफ से पंजाब के दौरे पर आए तब लाला लाजपत राय ने उन्हें अपने नगर हिसार आने का न्योता दिया, इसके साथ ही एक सार्वजनिक सभा का भी आयोजन किया।

यह कांग्रेस से मिलने का पहला मौका था, जिसने इनके जीवन को एक नया राजनीतिक आधार दिया। भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय के अंदर बचपन से ही देशभक्ति और समर्पण की भावना थी।

बता दें कि इलाहाबाद में इंडियन नेशनल कांग्रेस के सेशन के दौरान आपके ओजस्वी भाषण ने वहां मौजूद सभी लोगों का ध्यान अपनी तरफ केन्द्रित किया, जिससे आपकी लोकप्रियता और भी बढ़ गयी, इससे उन्हें कांग्रेस में आगे बढ़ने की दिशा भी मिली।

धीरे-धीरे लाला लाजपत राय कांग्रेस के एक सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। १८९२ में लाहौर चले गए, कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, इसके बाद उन्हें 'हिसार नगर निगम' का सदस्य चुना गया और फिर बाद में सचिव भी चुन लिए गए। साल १९०६ में उनको कांग्रेस ने गोपालकृष्ण के साथ शिष्टमंडल का सदस्य भी बनाया गया।

कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में लाला लाजपत राय

बता दें कि भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय को उनके काम को देखते हुए साल १९२० में राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। इस दौरान आपके चहेतों की संख्या काफी बढ़ चुकी थी, बढ़ती लोकप्रियता ने ही उन्हें नेशनल हीरो बना दिया था। भारत की आजादी के महान नायक लाला लाजपत राय जी ने अपने कामों से लोगों के दिल शेष पृष्ठ १३ पर...

पृष्ठ १२ से ... में अपनी एक अलग पहचान बनाई थी, इसी वजह से लोग उन पर भरोसा करने लगे, और आपके अनुयायी बन गए।

आपने लाहौर में सर्वेन्ट्स ऑफ पीपल सोसाइटी का गठन किया था, जो कि नॉन-प्रॉफिट ऑर्गनाइजेशन था। वहीं आपकी बढती लोकप्रियता का प्रभाव ब्रिटिश सरकार पर भी पड़ने लगा था। ब्रिटिश सरकार को भी आपसे डर लगने लगा, ब्रिटिशर्स आपको कांग्रेस से अलग करना चाहते थे लेकिन यह करना ब्रिटिश शासकों के लिए इतना आसान नहीं था।

ब्रिटिश सरकार ने साल १९२१ से लेकर १९२३ तक मांडले जेल में कैद कर लिया, लेकिन ब्रिटिश सरकार को उनका यह दांव उल्टा पड़ गया क्योंकि उस समय लाला लाजपत राय की ख्याति इतनी बढ़ गई थी कि लोग ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन करने लगे, जिसके बाद लोगों के दबाव में आकर अंग्रेज सरकार ने अपना फैसला बदलकर लाला लाजपत राय को जेल से रिहा कर दिया।

दो साल बाद जब लाला लाजपत राय जेल से छूटे तो आपने देश में बढ़ रही साम्प्रदायिक समस्याओं पर ध्यान दिया, दरअसल उस समय इस तरह की समस्याएं देश के लिए बड़ी खतरा बन चुकी थी। दरअसल उस समय की परिस्थितियों में हिन्दू-मुस्लिम एकता के महत्व को आपने समझ लिया था, इसी वजह से साल १९२५ में आपने कलकत्ता में हिन्दू महासभा का आयोजन किया, जहां उनके ओजस्वी भाषण ने बहुत से हिन्दुओं को देश के स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया।

लाला लाजपत राय का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

लाला लाजपत राय एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिनके अंदर हर किसी को प्रभावित करने का हुनर था, देश की सेवा करने का भाव बचपन से ही था अर्थात वे एक सच्चे देशभक्त थे जिनका एक मात्र उद्देश्य था देश की सेवा करना और इसी उद्देश्य से वह हिसार से लाहौर शिफ्ट हो गए, जहां पर पंजाब हाई कोर्ट था, यहां पर उन्होंने समाज के लिए कई काम किए।

आपने देश में स्वदेशी वस्तुएं अपनाने के लिए एक अभियान चलाया, वहीं जब १९०५ में बंगाल का विभाजन कर दिया गया तो आपने इसका जमकर विरोध किया, आंदोलन में बढ़-चढकर हिस्सा लिया।

सुरेंद्रनाथ बनर्जी और बिपिन चंद्र पाल जैसे आंदोलनकारियों के साथ मिलकर ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के खिलाफ विरोध किया, इस तरह वे लगातार देश की सेवा में तत्पर रहे और देश के सम्मान के लिए लगातार काम करते रहे।

साल १९०७ में आपके द्वारा लायी गयी क्रान्ति से लाहौर और रावलपिंडी में परिवर्तन की लहर दौड़ पड़ी, जिसकी वजह से उन्हें १९०७ में गिरफ्तार कर मांडले जेल भेज दिया गया।

लाला जी ने अपने जीवन में कई संघर्षों को पार किया। बता दें कि एक समय ऐसा भी आया कि जब लाला जी के विचारों से कांग्रेस के कुछ नेता पूरी तरह असहमत दिखने लगे।

एक समय लाला जी गरम दल का हिस्सा माने जाने लगे, जो कि ब्रिटिश सरकार से लड़कर पूर्ण स्वराज लेना चाहती थी। वहीं कुछ समय तक कांग्रेस से अलग रहने के बाद साल १९१२ में वापिस कांग्रेस को ज्वॉइन कर लिया, मात्र दो साल बाद कांग्रेस की तरफ से प्रतिनिधि बनकर इंग्लैंड चले गए, जहां उन्होंने भारत की स्थिति में सुधार के लिए अंग्रेजों से विचार-विमर्श किया।

इस दौरान उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर 'गरम दल' की विचारधारा का सूत्रपात कर दिया और जनता को यह भरोसा दिलाने में सफल हो गए कि अगर आजादी चाहिए तो यह सिर्फ प्रस्ताव पास करने और गिड़गिड़ाने से मिलने वाली नहीं है।

अमेरिका जब आप गए वहाँ आपने स्वाधीनता प्रेमी अमेरिकावासियों के सामने भारत की स्वाधीनता का पक्ष बड़ी प्रबलता से अपने क्रांतिकारी किताबों और अपने प्रभावी भाषणों से पेश किया, आपने भारतीयों पर ब्रिटिश सरकार के द्वारा किए गए अत्याचारों की भी खुलकर चर्चा की।

इस दौरान अमेरिका में उन्होंने इंडियन होम रूल लीग की स्थापना की, इसके अलावा एक 'यंग इंडिया' नाम का जर्नल भी प्रकाशित करना शुरू किया, जिसमें भारतीय कल्चर और देश की स्वतन्त्रता की जरूरत के बारे में लिखा जाता था और इस पेपर की वजह से पूरी दुनिया में वे मशहूर होते चले गए।

असहयोग आंदोलन में लाला जी की भूमिका-

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जब भारतीय सरकार ने कांग्रेस से युद्ध में सहायता की मांग की थी तो उसने यह भी वादा किया था कि **शेष पृष्ठ १४ पर...**

करते हैं प्रीत भारत से!
कहेंगे देश को केवल भारत
आप भी बोलें 'भारत' को केवल BHARAT
INDIA नाम तो गुलामी का प्रतीक है
जय भारत! जय भारत! जय भारत!

Randeep Dhankar
मो. : 9314518454
पूर्व चेयरमेन राजस्थान पर्यटन विकास निगम, राजस्थान सरकार
47, Sangram Colony,
C-Scheme, Jaipur, Rajasthan-302001

पृष्ठ १३ से ... युद्ध समाप्ति पर भारतीय नागरिकों को अपनी सरकार निर्माण करने का अधिकार प्रदान कर देगी, लेकिन जैसे ही युद्ध खत्म हुआ तो भारतीय सरकार अपने वादे से मुकर गई जिसके बाद कांग्रेस में ब्रिटिश सरकार के लिए पूरी तरह से रोष व्याप्त हो गया, इस दौरान खिलाफत आन्दोलन और जलियांवाला बाग हत्या कांड की दिल दहला देने वाली घटना के कारण असहयोग आन्दोलन किया गया, जिसमें पंजाब से लाला लाजपत राय जी के नेतृत्व की कमान संभाली।

धीरे-धीरे आपके नेतृत्व में पंजाब में इस आन्दोलन ने बहुत बड़ा रुप ले लिया, जिसकी वजह से आपको शेर-ए-पंजाब कहा जाने लगा, वहीं इसके बाद लाला जी के नेतृत्व में ही सविनय अवज्ञा आन्दोलन (असहयोग आन्दोलन) के सम्बंध में कांग्रेस की पंजाब में बैठक भी हुई, जिसकी वजह से आपको अन्य सदस्यों के साथ सार्वजनिक सभा करने के कारण झूठे केस में गिरफ्तार कर लिया गया।

७ जनवरी को आपके खिलाफ केस न्यायालय में पेश किया तो न्यायालय की प्रक्रिया में भाग लेने से यह कहते हुये मना कर दिया कि इन्हें ब्रिटेन की न्याय प्रणाली में कोई विश्वास नहीं है अतः इनकी तरफ से न तो कोई गवाही हुई और न ही किसी वकील के द्वारा जिरह पेश की गयी, इस गिरफ्तारी के बाद लाला लाजपत राय को दो साल की सजा सुनायी गई। जेल की परिस्थितियों में लाला जी का स्वास्थ्य खराब हो गया, लगभग २० महीने की सजा काटने के बाद खराब स्वास्थ्य के कारण आजाद कर दिया गया।

लाला जी के जीवन का आखिरी आंदोलन साइमन कमीशन का विरोध

साल १९२८ में ब्रिटिश सरकार द्वारा साइमन कमीशन लाए जाने के बाद आपने इसका जमकर विरोध किया और कई रैलियों का आयोजन किया, भाषण दिए। दरअसल साइमन कमीशन भारत में संविधान के लिए चर्चा करने के लिए एक बनाया गया एक कमीशन था, जिसके पैनल में एक भी भारतीय सदस्य को शामिल नहीं किया गया।

'संकलित चित्र'

लाला जी इस साइमन कमीशन का विरोध शांतिपूर्वक करना चाहते थे, आपकी यह मांग थी कि अगर कमीशन पैनल में भारतीय नहीं रह सकते तो ये कमीशन अपने देश वापस लौट जाए, लेकिन ब्रिटिश सरकार इनकी मांग मानने को तैयार नहीं हुई और इसके उलट ब्रिटिश सरकार ने लाठी चार्ज कर दिया, जिसमें लालाजी बुरी तरह से घायल हो गए, फिर उनका स्वास्थ कभी नहीं सुधरा।

लाला लाजपत राय का निधन –

इस घटना के बाद लाला लाजपत राय जी पूरी तरह से टूट गए थे और उनका स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता चला गया और फिर १७ नवंबर १९२८ स्वराज्य का यह उपासक हमेशा के लिए सो गए, इस तरह भारत की आजादी के महान नायक लाला लाजपत राय जी का जीवन कई संघर्षों की महागाथा बन गयी। आपने अपनी जीवन में कई लड़ाईयां लड़कर देश की सेवा की, और गुलाम भारत को स्वतंत्रता दिलवाने में मदद की। लाला लाजपत राय की देश के लिए दी गई कुर्बानियों को हमेशा-हमेशा याद किया जाता रहेगा।

लाला लाजपत राय लिखित मुख्य किताबें –

भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय एक महान विचारक होने के साथ-साथ एक महान लेखक भी थे, अपने कार्यों और विचारों के साथ ही अपने लेखन कार्यों से भी लोगों का मार्गदर्शन किया, आप द्वारा लिखित कुछ पुस्तक निम्नलिखित हैं-

'हिस्ट्री ऑफ़ आर्य समाज'
इंग्लैंड'ज डेब्ट टू इंडिया: इंडिया
दी प्रॉब्लम ऑफ़ नेशनल एजुकेशन इन इंडिया
स्वराज एंड सोशल चेंज,
दी युनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका: अ हिन्दू 'स इम्प्रैशन एंड स्टडी'
मेजिनी का चरित्र चित्रण (१८९६)
गेरिबाल्डी का चरित्र चित्रण (१८९६)
शिवाजी का चरित्र चित्रण (१८९६)
दयानन्द सरस्वती (१८९८)
युगपुरुष भगवान श्रीकृष्ण (१८९८)
मेरी निर्वासन कथा
रोमांचक ब्रह्मा
भगवद् गीता का संदेश (१९०८)

लाला लाजपत राय के विचार –

'मनुष्य अपने गुणों से आगे बढ़ता है न कि दूसरों कि कृपा से'।

'मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में कील साबित होगी'।

'मेरा विश्वास है कि बहुत से मुद्दों पर मेरी खामोशी लम्बे समय में फायदेमंद होगी'। जय भारत!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

वीरता और साहस की मिसाल - गुरु तेग बहादुर (२४ नवम्बर)

भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अनेक धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं से मिलकर बनी है। धार्मिक और सांस्कृतिक तौर पर अत्याधिक भिन्नता होने के बावजूद भारत एक ऐसा राष्ट्र है जहां सभी धर्मों को बराबर मान-सम्मान और अधिकार दिए गए हैं, लेकिन पहले ऐसा नहीं था क्योंकि तब अधिकार केवल जंग और शहादत पर ही निर्भर होते थे, यही वजह है कि यहां समय-समय पर विभिन्न धर्मों के लोगों द्वारा आक्रमण और जीत दर्ज की जाती रही। अंग्रेजी हुकूमत आने से पहले यहां राजकीय स्थिरता जैसी कोई बात नजर नहीं आती थी। पंथ की स्थापना के लिए आक्रमण और अतिक्रमण जैसे माहौल के बीच यहां शासन की बागडोर संभाली जाती थी, लेकिन जब धर्म के नाम पर मरने-मिटने की बात आती है तो सिख समुदाय का नाम हमेशा ही सम्मान के साथ लिया जाता है। सिखों के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर ऐसी ही एक शख्सियत हैं जिन्होंने सिख धर्म के सम्मान को बरकरार रखने के लिए अपनी जान की भी कोई परवाह नहीं की।

गुरु तेग बहादुर का जीवन

गुरु हरगोविन्द सिंह के पांचवें पुत्र, गुरु तेग बहादुर का जन्म अमृतसर (पंजाब) में हुआ था। सिखों के आठवें गुरु 'हरिकृष्ण राय' जी की अकाल मृत्यु हो जाने के कारण जनमत द्वारा गुरु तेगबहादुर को गुरु बनाया गया। गुरुतेग बहादुर के बचपन का नाम त्यागमल था। १४ वर्ष की छोटी सी आयु में अपने पिता के साथ मुगलों के हमले के खिलाफ हुए युद्ध में उन्होंने वीरता का परिचय दिया था। आपकी वीरता से प्रभावित होकर आपके पिता ने आपका नाम त्यागमल से तेगबहादुर (तलवार के धनी) रख दिया।

संत समाज के शिरोमणि – संत तुकाराम

धैर्य, वैराग्य और त्याग की मूर्ति गुरु तेगबहादुर जी ने एकांत में लगातार २० वर्ष तक 'बाबा बकाला' नामक स्थान पर साधना की। गुरु तेग बहादुर जी ने धर्म के प्रसार लिए कई स्थानों का भ्रमण किया। आनंदपुर साहब से रोपण, सैफाबाद होते हुए वे खिआला (खदल) पहुंचे, इसके बाद गुरु तेगबहादुर जी प्रयाग, बनारस, पटना, असम आदि क्षेत्रों में गए, जहां आपने आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए कई कार्य किए, गुरु तेग बहादुर जी ने रूढ़ियों, अंधविश्वासों की घोर आलोचनाएं की और विभिन्न आदर्श स्थापित किए, सामाजिक हित में कार्य करते हुए आपने कई कुएं खुदवाए और धर्मशालाएं बनवाई।

सिख धर्म के सम्मान के लिए हो गए कुर्बान

औरंगजेब के दरबार में एक विद्वान पंडित रोज़ गीता के श्लोक पढ़ता और उसका अर्थ सुनाता था, पर वह पंडित गीता में से कुछ श्लोक छोड़ दिया करता था। एक दिन पंडित बीमार हो गया और औरंगजेब को गीता सुनाने के लिए उसने अपने बेटे को भेज दिया, परन्तु उसे बताना भूल गया कि उसे किन-किन श्लोकों का अर्थ राजा को नहीं बताना। पंडित के बेटे ने जाकर औरंगजेब को पूरी गीता का अर्थ सुना दिया। गीता का पूरा अर्थ सुनकर औरंगजेब को यह ज्ञान हो गया कि प्रत्येक धर्म अपने आपमें महान है किन्तु औरंगजेब की हठधर्मिता थी कि उसे अपने धर्म के धर्म के अतिरिक्त किसी दूसरे धर्म की प्रशंसा सहन नहीं थी।

औरंगजेब ने सबको इस्लाम धर्म अपनाने का आदेश दे दिया और संबंधित अधिकारी को यह कार्य सौंप दिया। औरंगजेब ने कहा, 'सबसे कह दो या तो इस्लाम धर्म कबूल करें या मौत को गले लगा ले।' औरंगजेब के जुल्मों से त्रस्त आकर कश्मीर के पंडित गुरु तेगबहादुर के पास आए और उन्हें बताया कि किस प्रकार इस्लाम को स्वीकार करने के लिए अत्याचार किया जा रहा है, यातनाएं दी जा रही हैं और उनसे अपने धर्म को बचाने की गुहार लगाई। तत्पश्चात गुरु तेग बहादुर जी ने पंडितों से कहा कि आप जाकर औरंगजेब से कह दें कि यदि गुरु तेग बहादुर ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया तो उनके बाद हम भी इस्लाम धर्म ग्रहण कर लेंगे और यदि आप गुरु तेग बहादुर जी से इस्लाम धारण नहीं करवा पाए तो हम भी इस्लाम धर्म धारण नहीं करेंगे'।

गुरु तेगबहादुर दिल्ली में औरंगजेब के दरबार में स्वयं गए। औरंगजेब ने उन्हें बहुत से लालच दिए पर गुरु तेगबहादुर जी नहीं माने तो उन पर ज़ुल्म किए गये, उन्हें कैद कर लिया गया, दो शिष्यों को मारकर गुरु तेगबहादुर जी को डराने की कोशिश की गयी, पर वे नहीं माने। आपने औरंगजेब से कहा – 'यदि तुम ज़बरदस्ती लोगों से इस्लाम धर्म ग्रहण करवाओगे तो तुम सच्चे मुसलमान नहीं हो, क्योंकि इस्लाम धर्म यह शिक्षा नहीं देता कि किसी पर जुल्म करके मुस्लिम बनाया जाए'।

शीशगंज साहिब की स्थापना

औरंगजेब यह सुनकर आगबबूला हो गया, उसने दिल्ली के चांदनी चौक पर गुरु तेग बहादुर जी का शीश काटने का हुक्म ज़ारी कर दिया और गुरु तेग बहादुर जी ने हंसते-हंसते बलिदान दे दिया, गुरु तेग बहादुर जी की याद में उनके 'शहीदी स्थल' पर गुरुद्वारा बना है, जिसका नाम गुरुद्वारा 'शीश गंज साहिब' है।

भारत में संविधान दिवस (२६ नवम्बर)

भारत में २६ नवम्बर को हर साल संविधान दिवस मनाया जाता है, क्योंकि वर्ष १९४९ में २६ नवम्बर को संविधान सभा द्वारा भारत के संविधान को स्वीकृत किया गया था, जो २६ जनवरी १९५० को प्रभाव में आया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर को भारत के संविधान का जनक कहा जाता है।

भारत की आजादी के बाद कांग्रेस सरकार ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर को भारत के प्रथम कानून मंत्री के रुप में सेवा करने का निमंत्रण दिया, उन्हें २९ अगस्त को संविधान की प्रारुप समिति का अध्यक्ष बनाया गया, आप भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार थे, इसलिए ही आपको मजबूत और एकजुट भारत के लिए जाना जाता है।

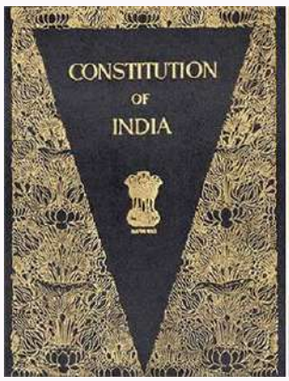

भारतीय संविधान का पहला वर्णन ग्रानविले ऑस्टिन ने सामाजिक क्रांति को प्राप्त करने के लिये बताया था। भारतीय संविधान के प्रति बाबा साहेब अम्बेडकर का स्थायी योगदान भारत के सभी नागरिकों के लिए एक बहुत मददगार है। भारतीय संविधान देश को एक स्वतंत्र कम्युनिस्ट, धर्मनिरपेक्ष स्वायत्त और गणतंत्र भारतीय नागरिकों को सुरक्षित करने के लिए, न्याय, समानता, स्वतंत्रता और संघ के रूप में गठन करने के लिए अपनाया गया था। जब भारत के संविधान को अपनाया गया था, तब भारत के नागरिकों ने शांति, शिष्टता और प्रगति के साथ एक नए संवैधानिक, वैज्ञानिक, स्वराज्य और आधुनिक भारत में प्रवेश किया था। भारत का संविधान पूरी दुनिया में बहुत अनोखा है और संविधान सभा द्वारा पारित करने में लगभग २ साल, ११ महीने और १७ दिन का समय ले लिया गया।

भारतीय संविधान की विशेषताओं में से कुछ निम्नलिखित हैं:

- यह लिखित और विस्तृत है।
- यह लोकतांत्रिक सरकार है – निर्वाचित सदस्य।
- मौलिक अधिकार,
- न्यायपालिका की स्वतंत्रता, यात्रा, रहने, भाषण, धर्म, शिक्षा आदि की स्वतंत्रता,
- एकल राष्ट्रीयता,
- भारतीय संविधान लचीला और गैर लचीला दोनों है।
- राष्ट्रीय स्तर पर जाति व्यवस्था का उन्मूलन।
- समान नागरिक संहिता और आधिकारिक भाषाएं,
- केंद्र 'Ganrajya' के समान है,
- भारतीय संविधान अधिनियम में आने के बाद, भारत में महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला है।
- दुनिया भर में विभिन्न देशों ने भारतीय संविधान को अपनाया है।
- पड़ोसी देशों में से एक भूटान ने भी भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली को स्वीकार कर लिया है।

संविधान दिवस को क्यों मनाते है

भारत में संविधान दिवस २६ नवंबर को हर साल सरकारी तौर पर मनाया जाने वाला कार्यक्रम है जो संविधान के जनक डॉ भीमराव रामजी अम्बेडकर को याद और सम्मानित करने के लिए मनाया जाता है। भारत के लोग अपना संविधान शुरू करने के बाद अपना इतिहास, स्वतंत्रता और शांति का जश्न मनाते हैं।

संविधान दिवस भारत के संविधान के महत्व को समझाने के लिए प्रत्येक वर्ष २६ नवंबर के दिन मनाया जाता है, जिसमें लोगो को यह समझाया जाता है कि आखिर कैसे हमारा संविधान हमारे देश के तरक्की के लिए महत्वपूर्ण है तथा डॉ अंबेडकर को हमारे देश के संविधान निर्माण में किन-किन कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा।

आजादी के पहले तक भारत में रियासतों के अपने अलग-अलग नियम कानून थे, जिन्हें देश के राजनितिक नियम, कानून और प्रक्रिया के अंतर्गत लाने की आवश्यकता थी, इसके अलावा हमारे देश को एक ऐसे संविधान की आवश्कता थी, जिसमें देश में रहने वाले लोगों के मूल अधिकार, कर्तव्यों को निर्धारित किया गया हो ताकि हमारा देश तेजी से तरक्की कर सके और नयी उचाइयों को प्राप्त कर सके। भारत के संविधान सभा ने २६ जनवरी १९४९ को भारत के संविधान को अपनाया और इसके प्रभावीकरण की शुरुआत २६ जनवरी १९५० से हुई।

संविधान दिवस पर हमें अपने अंदर ज्ञान का दिपक प्रज्जवलित करने की आवश्यकता है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ीयों को हमारे देश के संविधान के महत्व को समझ सके, जिससे की वह इसका सम्मान तथा पालन करें, इसके साथ ही यह हमें वर्तमान से जोड़ने का कार्य करता है, जब लोग जनतंत्र का महत्व दिन-प्रतिदिन भूलते जा रहे हैं, यही वह तरीका जिसे अपनाकर हम अपने देश के संविधान निर्माताओं को सच्ची श्रद्धांजली प्रदान कर सकते हैं और लोगों में उनके विचारों का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं।

आवश्यक यह है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ीयों को अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष और इसमें योगदान देने वाले क्रांतिकारियों के विषय में बताएं ताकि वह इस बात को वे समझ सकें की आखिर कितनी कठिनाइयों के बाद हमारे देश को स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई है। 'संविधान दिवस' वास्तव में वह दिन है जो हमें हमारे ज्ञान के दीपक को हमारे आने वाली पीढ़ीयों तक पहुंचाने में हमारी सहायता करता है।

भारत में संविधान दिवस कैसे मनाया जाता है

संविधान दिवस वह दिन है, जब हमें अपने संविधान के विषय में और भी ज्यादा जानने का अवसर प्राप्त होता है, इस दिन सरकारी तथा नीजी संस्थानों में कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। **शेष पृष्ठ १७ पर...**

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर अपनी प्रभावी मुद्रा में
'संकलित चित्र'

पृष्ठ १६ से ... संविधान दिवस के दिन जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है वह है लोगों को 'भारत के संविधान के प्रस्तावना' की जानकारी देना, जिसके विषय में देशभर के विद्यालयों, कालेजों और कार्यालयों में समूहों द्वारा लोगों को काफी आसान भाषा में समझाया जाता है।

इसके साथ ही विद्यालयों में कई तरह के प्रश्नोत्तर प्रतियोगिताएं, भाषण और निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है, जो भारत के संविधान और डॉ भीमराव अंबेडकर के उपर केंद्रित होती हैं, इसके साथ ही इस दिन कई सारे व्याख्यानों और सेमिनारों का भी आयोजन किया जाता है, जिनमें हमारे संविधान के महत्वपूर्ण विषयों के बारे में समझाया जाता है, इसी तरह कई सारे विद्यालयों में छात्रों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें छात्रों द्वारा कई सारे विषयों पर चर्चा की जाती है।

प्रत्येक वर्ष २६ नवंबर के दिन संविधान सभा का विशेष सत्र बुलाया जाता है, जिसमें सभी राजनैतिक पार्टियों द्वारा डॉ बी. आर. अंबेडकर को देश के संविधान निर्माण में अपना अहम योगदान देने के लिए उन्हें श्रद्धांजलि प्रदान करते है, इस दिन डॉ. अंबेडकर के स्मारक पर भी विशेष साज-सजावट की जाती है, इसके साथ ही इस दिन खेल मंत्रालय द्वारा हमारे देश के संविधान निर्माता और सबके प्रिय डॉ भीमराव अंबेडकर को श्रद्धांजलि प्रदान करने के लिए मिनी मैराथनों का आयोजन किया जाता है।

संविधान दिवस को और भी प्रभावशाली तरीके से मनाने के लिए सुझाव

संविधान दिवस को ऐसा दिन नही समझना चाहिए जिसे सिर्फ सरकार और राजनैतिक पार्टियों द्वारा मनाना चाहिए। अपने देश का एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते यह हमारा कर्तव्य है कि हम इस दिन को पूरे जोश और उत्साह के साथ मनायें और हमारे देश के संविधान निर्माताओं को हमारे ओर से दी जा सकने वाली सच्ची श्रद्धांजलि हो। यह मात्र हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि हमारा दायित्व भी है कि हम इस दिन को राष्ट्रीय पर्व के रुप में मनायें, इसी में से कुछ बातों के विषय में नीचे बताया गया है:

जागरुकता अभियान चलाना :

इस दिन का प्रचार-प्रसार करने के लिए हम अपने **शेष पृष्ठ १८ पर...**

पृष्ठ १७ से ... क्षेत्रों और सोसायटीयों में संविधान दिवस के विषय में जागरुकता अभियान चला सकते है, हमें लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरुक करने की भी आवश्यकता है, इसके साथ ही अपने संविधान प्रस्तावना के विषय में लोगों को अधिक से अधिक जानकारी देने के लिए उनके बीच पैंफलेट और पोस्टर बांटने चाहिए ताकि लोग संविधान का अर्थ समझ सके और इसके पालन के प्रति जागरुक हो सके।

अभिनय मंचन और नाटकों द्वारा

अभिनय मंचन और नाटक लोगों के मध्य अपने विचारों को प्रकट करने का अच्छा तरीका है, इसी तरह छोटे नाटकों के माध्यम से हम लोगों को भारत के स्वतंत्रता संघर्ष और संविधान निर्माण के विषय में जानकारी देते हुए इसके महत्व को समझा सकते हैं, इसके द्वारा वह सिर्फ ना हमारे महान नेताओं के द्वारा देश के आजादी के लिए किये गये संघर्षों को समझ पायेंगे, जिससे वह इस जनतंत्र का सम्मान और भी अच्छे से कर पायेंगे।

विद्यालयों में सेमिनार और व्याख्यान का आयोजन करके

बच्चों को देश का आधार माना जाता है, इसलिए यह काफी महत्वपूर्ण है कि वह अपने देश के इतिहास और संस्कृति से परिचित हों, इस विषय पर विद्यालयों और कालेजों में सेमिनार और व्याख्यानों का आयोजन करके हम बच्चों को यह समझा पायेंगे कि आखिर कैसे हमारे देश के महान विभूतियों ने इस नये जनतांत्रिक भारत का निर्माण किया, यह उन्हें हमारे देश के महान इतिहास से परिचित कराने का कार्य करने के साथ, उनके अंदर देशभक्ति की भावना भी पैदा करेगा।

'संकलित चित्र'

संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भारतीय संविधान सौंपते हुए डॉ. बी.आर अम्बेडकर, (२६ नवम्बर १९४९)

सोशल मीडिया पर अभियान चलाकर

किसी भी विषय पर लोगों में जागरुकता फैलाने के लिए आज सोशल मीडिया एक बेहतरीन साधन है। सोशल मीडिया के माध्यम से संविधान दिवस के विषय में लोगों को जागरुक करने के लिए कई सारे अभियान चलाये जा सकते हैं। आज के युवक इस देश के गौरवशाली इतिहास को भूल चुके हैं, क्योंकि लगभग सभी युवा सोशल मीडिया से जुड़े हुए है, इसलिए इसके माध्यम से हम काफी आसानी से संवैधानिक बातें उन तक पहुंचा सकते हैं।

फ्लैग मार्च का आयोजन करके

इसके साथ ही हम फ्लैग मार्च का भी आयोजन कर सकते हैं और लोगों में प्रचार के लिए पर्चे बांट सकते हैं, इसके साथ ही हम डॉ अंबेडकर को संविधान निर्माण और दूसरे उनके महान कार्यों के लिए श्रद्धांजलि प्रदान करने के लिए अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन कर सकते हैं।

प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया का योगदान

प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया काफी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है, इस विषय में लोगों को जानकारी देने के लिए 'संविधान दिवस' के दिन कई सारे कार्यक्रम चलाये जा सकते हैं, जिसमें हमारे देश के संविधान निर्माताओं के महत्वपूर्ण प्रयासों और उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों को बताया जा सकता है।

'संविधान दिवस' ना सिर्फ हमें अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष की याद दिलाता है बल्कि हमें हमारे देश के उन गुमनाम नायकों की भी याद दिलाता है, जिनका इस संविधान निर्माण में अतुलनीय योगदान रहा है, हमारे देश के संविधान निर्माण में उनके द्वारा किये गये इस कठिन परिश्रम को अनदेखा नहीं किया जा सकता, इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि हम उनके इन महान कार्यों के लिए हम उन्हें इस विशेष दिन श्रद्धांजलि अर्पित करें।

संविधान निर्माण का श्रेय संविधान सभा के हर एक व्यक्ति को जाता है। 'संविधान दिवस' का मुख्य मकसद हमारे देश के संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर और इसके निर्माण में उनका साथ निभाने वाले अन्य सदस्यों के अभिवादन के लिए मनाया जाता है, क्योंकि उनके इस कठिन परिश्रम द्वारा ही भारत आज हर क्षेत्र में नये उंचाइयों को प्राप्त कर रहा है। जय भारत!

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
करते हैं प्रीत भारत से!
कहेंगे देश को केवल भारत
आप भी बोलें 'भारत' को केवल BHARAT
INDIA नाम तो गुलामी का प्रतीक है
जय भारत! जय भारत! जय भारत!

BJP

रामलल्लू वैश्य

भ्रमणध्वनिः ९४२५१७६५८५
विधायक, सिंगरौली, मध्य प्रदेश
भारतीय जनता पार्टी
मेढ़ौली वार्ड-९, तानसेन, पो. मोरना,
जि. सिंगरोली, मध्य प्रदेश - ४८६८८९
भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

महात्मा ज्योतिबा फुले का संक्षिप्त परिचय (२८ नवम्बर)

महात्मा ज्योतिबा फुले भारत के महान पुरूषों में से एक हैं। आप समाज सुधारक, लेखक, दार्शनिक, विचारक, क्रान्तिकारी के साथ अनन्य प्रतिभाओं के धनी थे।

जन्म व प्रारंभिक जीवन

ज्योतिराव गोविंदराव फुले का जन्म सन् ११ अप्रैल १८२७ को तात्कालिक ब्रिटिश भारत के खानवाडी (पुणे) में हुआ। आपकी माता का नाम चिमनाबाई और पिता का नाम गोविंदराव था। मात्र एक वर्ष की अवस्था में ही आपकी माता का स्वर्गवास हो गया, आपका पालन पोषण सगुणाबाई नामक दाई ने किया।

कैसे पड़ा 'फुले' नाम

आपका परिवार कई पीढ़ी पहले 'सतारा' से आकर यहाँ बसा था, यहाँ आकर फूलों से गजरा व माला इत्यादि बनाने का काम शुरू किया, इसलिए 'फुले' के नाम से जाने गए।

ज्योतिबा की शिक्षा

आपने प्रारंभ में मराठी भाषा में शिक्षा प्राप्त की, परन्तु बाद में जाति भेद के कारण बीच में ही पढ़ाई छूट गयी, बाद में २१ वर्ष की अवस्था में अंग्रेजी भाषा में मात्र ७ वीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की।

वैवाहिक जीवन : आपका विवाह सन् १८४० ई. में सावित्री बाई फुले से हुआ, जो कि एक प्रसिद्ध स्वयंसेवी महिला के रूप में सामने आयीं, स्त्री शिक्षा और दलितों को शिक्षा का अधिकार दिलाने के उद्देश्य में दोनों पति-पत्नी ने साथ मिलकर कार्य किया।

स्कूल की स्थापना

शिक्षा के क्षेत्र में औपचारिक रूप से कुछ करने के उद्देश्य से आपने सन् १८४८ ई. में एक स्कूल खोला। स्त्री शिक्षा और उनकी दशा सुधारने के क्षेत्र में यह पहला कदम था, परन्तु एक और समस्या आयी कि लड़कियों को पढ़ाने के लिए कोई शिक्षिका नहीं मिली, तब आपने दिन रात एक कर स्वयं यह कार्य किया और पत्नी सावित्री बाई फुले को इस काबिल बनाया। आपके इस कार्य में कुछ उच्च वर्ग के पितृसत्तात्मक विचारधारावादियों ने आपके इस कार्य में बाधा डालने की कोशिश की, परन्तु ज्योतिबा नहीं रुके तो उनके पिता पर दबाव दे पत्नी सहित घर से निकलवा दिया, कुछ समय के लिए आपके कार्य व जीवन में बाधा जरूर आयी, परन्तु शीघ्र ही आप अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर हो गए।

जोतिराव फुले व सावित्रीबाई फुले के पुतले औरंगपुरा, संभाजी नगर, महाराष्ट्र

सामाजिक कार्य : आपने दलितों व महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्य किये। २४ सितंबर १८७३ ई. को आपने महाराष्ट्र में 'सत्यशोधक' समाज की स्थापना की, समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा प्रदान किये जाने की मुखालफत की, भारतीय समाज में प्रचलित जाति व्यवस्था के घोर विरोधी, समाज के जाति आधारित विभाजन का सदैव विरोध किया, आपने जाति प्रथा को समाप्त करने के उद्देश्य से बिना पंडित के ही विवाह संस्कार प्रारंभ किया, इसके लिए बॉम्बे हाई कोर्ट से मान्यता भी प्राप्त की, आपने बाल-विवाह का विरोध किया, आप विधवा पुनर्विवाह के समर्थक थे।

महात्मा ज्योतिबा फुले का साहित्य

ज्योतिबा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, उच्च कोटि के लेखक भी थे, आपके द्वारा लिखी गयी प्रमुख पुस्तकें निम्नलिखित हैं –

गुलामगिरी (१८७३), छत्रपति शिवाजी, अछूतों की कैफियत, किसान का कोड़ा, तृतीय रत्न, राजा भोसला का पखड़ा इत्यादि।

महात्मा की उपाधि

१८७३ ई. में सत्य शोधक समाज की स्थापना के बाद आपके सामाजिक कार्यों की सराहना देश भर में होने लगी, आपकी समाजसेवा को देखते हुए मुंबई की एक विशाल सभा में ११ मई १८८८ ई. को विट्ठलराव कृष्णाजी वंडेकर जी ने आपको महात्मा की उपाधि से सम्मानित किया।

मृत्यु : २८ नवंबर १८९० ई. को ६३ वर्ष की अवस्था में पुणे (महाराष्ट्र) में आप स्वर्गवासी हुए।

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)

सन् १९७५ में ज्योतिबा फुले के नाम पर बरेली में विश्वविद्यालय की स्थापना

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)

की गयी। रुहेलखण्ड क्षेत्र में शिक्षा के गिरते स्तर को ध्यान में रखते हुए यहाँ पर एक विश्वविद्यालय की आवश्यकता महसूस हुयी, इस विश्वविद्यालय की स्थापना से पूर्व यह क्षेत्र आगरा विश्वविद्यालय के अंतर्गत आता था, वर्तमान में इस विश्वविद्यालय में कुल २१ शैक्षणिक विभाग हैं, वर्तमान में विश्वविद्यालय से १७ गवर्नमेंट कॉलेज, २९ सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेज, १०८ स्ववित्त पोषित कॉलेज संबद्ध हैं, वर्तमान में विश्वविद्यालय द्वारा १५ स्नातक, ३६ परास्नातक, ०९ डिप्लोमा, २० पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा, ०२ M.Phil और ३४ डॉक्टरेट के कोर्स कराये जा रहे हैं। जय भारत!

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

6 दिसंबर ही क्यों पूरे वर्ष बाबा साहब का पैगाम लोगों तक पहुंचायें

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जीवन परिचय

डॉ. भीमराव अम्बेडकर को बाबासाहेब नाम से भी जाना जाता है। अम्बेडकर जी उनमें से एक है, जिन्होंने भारत के संविधान को बनाने में अपना योगदान दिया था। अम्बेडकर जी एक जाने-माने राजनेता व प्रख्यात विधिवेत्ता थे, आपने देश से छुआ छूत, जातिवाद को मिटाने के लिए बहुत से आन्दोलन किये, अपना पूरा जीवन गरीबों को दे दिया, दलित व पिछड़ी जाति के हक के लिए कड़ी मेहनत की। आजादी के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरु के कैबिनेट में पहली बार अम्बेडकर जी को लॉ मिनिस्टर बनाया गया, अपने अच्छे काम व देश के लिए बहुत कुछ करने के लिए अम्बेडकर जी को १९९० में देश के सबसे बड़े सम्मान 'भारत रत्न' से नवाजा गया।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म, परिवार, पत्नी, विवाह

अम्बेडकर जी अपने माँ बाप की १४ वीं संतान थे। आपके पिता इंडियन आर्मी में सूबेदार थे, उनकी पोस्टिंग इंदौर के पास महू में थी, यही अम्बेडकर जी का जन्म १४ अप्रैल १८९१ को हुआ। १८९४ में रिटायरमेंट के बाद आपका पूरा परिवार महाराष्ट्र के सतारा में शिफ्ट हो गया। कुछ दिनों के बाद आपकी माँ चल बसी, जिसके बाद आपके पिता ने दूसरी शादी कर ली और बॉम्बे शिफ्ट हो गए। १९०६ में १५ साल की उम्र में आपका विवाह ९ साल की रमाबाई से हो गया।

'संकलित चित्र'

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जाति भेदभाव एवं आरंभिक जीवन

छुआ छूत के बारे में अम्बेडकर जी ने बचपन से देखा था, वे हिन्दू मेहर कास्ट के थे, जिन्हें नीचा समझा जाता था व ऊँची कास्ट के लोग इन्हें छूना भी पाप समझते थे, इसी वजह से अम्बेडकर जी ने समाज में कई जगह भेदभाव का शिकार होना पड़ा, इस भेदभाव व निरादर का शिकार, अम्बेडकर जी को आर्मी स्कूल में भी होना पड़ा जहाँ वे पढ़ा करते थे, आपके समुदाय के बच्चों को कक्षा के अंदर तक बैठने नहीं दिया जाता था। शिक्षक तक उन पर ध्यान नहीं देते थे। पानी तक छूने नहीं दिया जाता था, स्कूल का चपरासी उपर से डालकर पानी देता था, जिस दिन चपरासी नहीं आता था, उस दिन पानी तक नहीं मिलता था।

डॉ भीमराव अम्बेडकर की शिक्षा

बॉम्बे में शिफ्ट होने के बाद अम्बेडकर जी की पढाई बॉम्बे में हुई। बता दें कि आपकी शादी १५ साल की उम्र में हो गई थी, १९०८ में आपने १२ वीं की परीक्षा पास की, स्कूल की पढाई पूरी करने के बाद अम्बेडकर जी को आगे की पढाई के लिए बॉम्बे के एल्फिनस्टोन कॉलेज जाने का मौका मिला, पढ़ाई में आप बहुत अच्छे व तेज दिमाग के थे, इसलिए बरोदा के गायकवाड के राजा सहयाजी से २५ रूपए की स्कॉलरशिप हर महीने मिलने लगी, राजनीती विज्ञान व अर्थशास्त्र में १९१२ में ग्रेजुएशन पूरा किया, अपने स्कॉलरशिप के पैसे को आगे की पढाई में लगाने की सोची और आगे की पढाई के लिए अमेरिका चले गए।

'संकलित चित्र'

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जीवन

अमेरिका से लौटने के बाद बरोदा के राजा ने आपको अपने राज्य में रक्षा मंत्री बना दिया, परन्तु यहाँ भी छुआछूत की बीमारी ने पीछा नहीं छोड़ा, इतने बड़े पद में होते हुए भी कई बार निरादर का सामना करना पड़ा। बॉम्बे गवर्नर की मदद से बॉम्बे के सिन्ड्रोम कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स एंड इकोनोमिक्स में राजनैतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बन गए। अम्बेडकर जी आगे और पढ़ना चाहते थे, इसलिए एक बार फिर भारत से बाहर इंग्लैंड चले गए, इस बार अपने खर्चो का भार खुद उठाया। यहाँ लन्दन युनिवर्सिटी ने डीएससी के अवार्ड से सम्मानित किया। अम्बेडकर जी ने कुछ समय जर्मनी की बोन यूनीवर्सिटी में गुज़ारा, आपने इकोनोमिक्स में अधिक अध्ययन किया। ८ जून १९२७ को कोलंबिया यूनीवर्सिटी में Doctrate की उपाधि से सम्मानित किया गया।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का ख़राब स्वास्थ्य

अम्बेडकर जी की पत्नी रमाबाई की लम्बी बीमारी के चलते १९३५ में मृत्यु हो गई। १९४० में भारतीय संविधान का ड्राफ्ट पूरा करने के बाद बहुत सी बीमारियों ने आपको घेर लिया। रात को नींद नहीं आती थी, पैरों में दर्द व डायबटीज भी बढ़ गई थी, जिस वजह से इन्सुलिन लेना पड़ता था। इलाज के लिए बॉम्बे गए जहाँ उनकी मुलाकात एक ब्राह्मण डॉक्टर शारदा कबीर से हुई। डॉ के रूप में उन्हें एक नया जीवन साथी मिल गया, आपने दूसरी शादी १५ अप्रैल १९४८ को दिल्ली में की।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का दलित आंदोलन

भारत लौटने के बाद अम्बेडकर जी ने छुआछूत व जातिवाद, जो किसी बीमारी से कम नहीं थी, देश को कई हिस्सों में थी, जिसे देश से निकालना बहुत जरुरी हो गया था, इसके खिलाफ अम्बेडकर जी ने मोर्चा छेड़ दिया। अम्बेडकर जी ने कहा नीची जाति व जनजाति एवं दलित के लिए देश में अलग से एक चुनाव प्रणाली होनी चाहिए, उन्हें भी पूरा हक मिलना चाहिए ताकि वे देश के चुनाव में हिस्सा ले सकें। अम्बेडकर जी ने इनके आरक्षण की भी बात सामने रखी। अम्बेडकर जी देश के कई हिस्सों में **शेष पृष्ठ २१ पर...**

पृष्ठ २० से... गए, वहां लोगों को समझाया कि जो पुरानी प्रथा प्रचलित है वो सामाजिक बुराई है उसे जड़ से उखाड़ कर फेंक देना चाहिए। आपने एक अखबार 'मूक्नायका' (लीडर ऑफ़ साइलेंट) शुरू किया। एक बार एक रैली में आपके भाषण को सुनने के बाद कोल्हापुर के शासक शाहूकर ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया, इस बात का पुरे देश में बहुत ही हल्ला हुआ, इस बात ने देश की राजनीती को एक नयी दिशा दे दी थी।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का राजनैतिक सफ़र

१९३६ में अम्बेडकर जी ने 'स्वतंत्र मजदूर पार्टी' का गठन किया। १९३७ के केन्द्रीय विधानसभा चुनाव में आपकी पार्टी को १५ सीटों की जीत मिली। अम्बेडकर जी अपनी इस पार्टी को आल इंडिया शीडयूल कास्ट पार्टी में बदल दिया, इस पार्टी के साथ आप १९४६ में संविधान सभा के चुनाव में खड़े हुए, लेकिन चुनाव में बहुत ही ख़राब प्रदर्शन रहा। कांग्रेस व महात्मा गाँधी ने अछूते लोगों को हरिजन नाम दिया, जिससे सब लोग उन्हें हरिजन ही बोलने लगे, लेकिन अम्बेडकर जी को ये बिल्कुल पसंद नहीं आया और उन्होंने उस बात का विरोध किया, उनका कहना था अछूते लोग भी हमारे समाज का एक हिस्सा हैं, वे भी बाकि लोगों की तरह सामान्य इन्सान है। अम्बेडकर जी को रक्षा सलाहकार कमिटी में रखा गया व वाइसराय एग्जीक्यूटिव कौंसिल में मजदूर मंत्री बनाया गया, आप आजाद भारत के पहले कानून मंत्री बने, दलित होने के बावजूद मंत्री बनना आपके लिए बहुत बड़ी उपाधि थी।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा संविधान का गठन

भीमराव अम्बेडकर जी को संविधान गठन कमिटी का चेयरमैन बनाया गया। स्कॉलर व प्रख्यात विधिवेत्ता भी कहा गया। अम्बेडकर जी ने देश की भिन्न-

'संकलित चित्र'

भिन्न जातियों को एक दुसरे से जोड़ने के लिए एक पुलिया का काम किया, सबके सामान अधिकार की बात पर जोर देते थे। अम्बेडकर जी के अनुसार अगर देश की अलग-अलग जाति एक दुसरे से अपनी लड़ाई ख़त्म नहीं करेंगी, तो देश एकजुट कभी नहीं हो सकता।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का बौद्ध धर्म में रूपांतरण

१९५० में अम्बेडकर जी एक बौद्धिक सम्मेलन को अटेंड करने श्रीलंका गए, वहां जाकर आपका जीवन बदल गया। आप बौद्ध धर्म से अत्यधिक प्रभावित हुए, और धर्म रुपान्तरण की ठान ली। श्रीलंका से भारत लौटने के बाद बौद्ध व उनके धर्म के बारे में किताब लिखी, अपने आपको इस धर्म में बदल लिया, अपने भाषण में अम्बेडकर जी हिन्दू रीती व जाति विभाजन की घोर निंदा करते थे, १९५५ में भारतीय बौद्ध महासभा का गठन किया, 'द बुद्धा व उनका धर्म' का विमोचन आपके मरणोपरांत हुआ।

१४ अक्टूबर १९५६ को अम्बेडकर जी ने एक आम सभा का आयोजन किया, जहाँ आपने ५ लाख लोगों को बौद्ध धर्म में रुपान्तरण करवाया। अम्बेडकर जी काठमांडू में आयोजित चौथी वर्ल्ड बुद्धिस्ट कांफ्रेंस को अटेंड करने गए, २ दिसम्बर १९५६ में अपनी पुस्तक 'द बुद्धा और कार्ल्स मार्क्स' का हस्तलिपिक पूरा किया।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की मृत्यु एवं कारण

१९५४-५५ के समय अम्बेडकर जी अपनी सेहत से बहुत परेशान थे, उन्हें डायबटीज, आँखों में धुंधलापन व कई तरह की अन्य बीमारियों ने घेर लिया

'संकलित चित्र'

था। ६ दिसम्बर १९५६ को अपने घर दिल्ली में अंतिम सांस ली, अपने जीवन में आपने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था, इसलिए अंतिम संस्कार बौद्ध धर्म की रीती अनुसार ही हुआ। जय भारत!

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
करते हैं प्रीत भारत से!
कहेंगे देश को केवल भारत
आप भी बोलें 'भारत' को केवल BHARAT
INDIA नाम तो गुलामी का प्रतीक है
Om Prakash Kejriwal Pawan Kejriwal
Aashiyana Stay
Balaji Travels
New Cinema Lane, Po.& Dist. Purulia,
West Bengal, Bharat - 723101
Mob: 9434006545
Office : 9932 / 9733 / 9434 - 105905
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें पर्यावरण बचायें

बिन पानी सब सून

जल संकट की समस्या पर महज लोग तभी क्यों बातें करते हैं जब ग्रीष्म ऋतु आ जाती है और पानी की किल्लत शुरु हो जाती है। जल संकट या इतनी सतही समस्या है जितना कि हम सोचते हैं? क्या इसके प्रति और अधिक गंभीर रवैया अपनाने की आवश्यकता नहीं?

हम भारतीय शुरू ही से इतने मूढ़ थे कि हमें कुछ संरक्षण वगैरह की बात सिखाने के लिए धर्म और आस्थाओं की आड़ लेनी पड़ी है, उसके चलते हम उलटा नुकसान करने के आदी हैं। मसलन हमसे कहा नदियों की पूजा करनी चाहिए, वे देवियां हैं तो हमने देवियों पर राख, फूल, भोजन, मृत देह, बलियां सब चढाना शुरू कर दिया। हमने अपने शौचालयों के निकास तक खोल दिए। कारखानों का अपशिष्ट, रसायन हमने अपने ही पीने के पानी में घोल लिया।

स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती कहते हैं – 'कुछ दिनों पूर्व तक माना जाता था कि गंगा मैदानी क्षेत्रों में ही प्रदूषित होती है, परंतु अब देखा जा रहा है कि बद्रिकाश्रम और गंगोत्री आदि उद्गम स्थलों से ही इसमें प्रदूषण प्रारंभ हो जाता है' क्योंकि वहां से ही आसपास के नगरों का मल-जल नदियों में आ रहा है। ऋषिकेश और हरिद्वार में आकर यह प्रदूषण और भी बढ़ जाता है। हरिद्वार का पवित्र माना जाने वाला गंगाजल आज आचमन के योग्य भी नहीं रह गया है, क्योंकि ऋषिकेश और हरिद्वार के बीच में एक रासायनिक फैक्टरी है, जिसका अवशेष गंगा में गिरता है। प्रयाग के पूर्व ही कन्नौज एवं कानपुर तक गंगा अत्यंत प्रदूषित हो जाती है। दूसरी तरफ हिमालय के यमुनोत्री से निकलने वाली यमुना नदी राजधानी दिल्ली का समस्त मल-जल लेते हुए मथुरा, वृंदावन और आगरा पहुंचती है, यही यमुना प्रयाग में गंगा से जा मिलती है और अपनी सारी गंदगी गंगा की गोद में डाल देती है, जब हरिद्वार में ही गंगा जल आचमन के योग्य नहीं रहा तो इलाहाबाद और वाराणसी का क्या कहना?

आज तो हम पैसे व शक्ति के चलते गरीबों व गांवों के हिस्से का पानी जलक्रीड़ाओं में बरबाद कर देंगे लेकिन उसकी भी तो सीमा है फिर ये वॉटरपार्क स्विमिंग पूल ही नहीं खाली टंकियां खाली बर्तन हमें मुंह जरूर चिढाएंगे। मानसून? उसके बदलते मिजाज की भनक नहीं पड़ी आपको? हमारी हर छोटी से छोटी गतिविधि का असर मौसम पर पड़ता है।

अन्नादिभवति भूतानि पर्जन्याद् अन्न संभव (भगवद्गीता)।

अन्न से जीव जन्म लेता है जल से ही अन्न उत्पन्न होता है।

हमारे मध्यकालीन कवि रहीम यूं ही तो नहीं लिख गये 'बिन पानी सब सून'। विश्व जल-संसाधन के अनुसार वर्तमान समय में दुनिया की दो-तिहाई अरब आबादी जल संकट की विकटता से दो चार हो रही है। उनमें भी तीसरी दुनिया के देश ज़्यादा हैं।

इस सदी के दो विकट आसन्न संकट मानव के स्वयं के पैदा किये हुए हैं - गरमाता वायुमण्डल और शुद्ध पानी की कमी। 'पेट्रोल को लेकर होने वाले युद्ध अब पानी को लेकर होंगे' यह उक्ति महज व्यंग्य नहीं, एक कड़वा सच है। आगामी वर्गों में हमारा जल उपभोग भयंकर तेजी से बढ़ेगा और पानी की भयंकर मार पड़ेगी, ग्रामीण और अविकसित इलाकों पर इस सबका सीधा-सीधा असर कृषि पर होगा।

जल-संरक्षण का उपाय क्या हो?

सबसे पहले हमें नागरिक जागरूकता की आवश्यकता है, फिर आवश्यकता है भ्रष्ट प्रशासन से जूझने की। शहरों में पानी का अविवेकपूर्ण उपयोग रोकना होगा। सिंचाई के तरीकों में सुधार लाना होगा। रासायनिक औद्योगिक इकाइयों के कचरे से नदियों तालाबों को बचाना होगा, कैसी विडम्बना है कि मानव सभ्यता ने इन्हीं नदियों के किनारे जन्म लिया और शायद मरण भी इन नदियों के साथ-साथ बदा है मानव सभ्यता का।

पहले गांवों, कस्बों और नगरों की सीमा तालाब होते थे, जिनमें बारिश का पानी भर जाता था। इन तालाबों का जल पूरे गांव के पीने, नहाने और पशुओं आदि के काम में आता था, लेकिन स्वार्थी मनुष्य ने तालाबों को पाट कर घर बना लिए, अब जरूरी है कि गांवों, कस्बों और नगरों में छोटे-बड़े तालाब बनाकर वर्षा जल का संरक्षण किया जाए, इसे पेड़-पौधों की सिंचाई के काम में लिया जाए।

जल संरक्षण को लेकर हुए बच्चों और महिलाओं को सचेत करना होगा, नहाने के लिए बाल्टी का प्रयोग करें। पुरूष दाढ़ी बनाते हुए नल बंद करना न भूलें। बरतन कम गंदे किए जाएं, बाल्टी या टब में बर्तन साफ करवाएं तो जल की बहुत बड़ी हानि रोकी जा सकती है। टॉयलेट-फ्लश टैंक में प्लास्टिक-बॉटल में रेत भरकर रख देने से हर बार एक लीटर जल बच सकता है।

हर घर की छत पर वर्षा जल एकत्रित करने के लिए एक-दो टंकी बनाई जाएं और इन्हें मजबूत जाली या फिल्टर कपड़े से ढंक दिया जाए तो हर घर में जल संरक्षण किया जा सकेगा। घरों, मुहल्लों और सार्वजनिक पार्कों, स्कूलों अस्पतालों, दुकानों, मंदिर आदि में लगी नल की टोंटियां खुली या टूटी रहती हैं, तो अनजाने ही प्रतिदिन हजारों लीटर जल बेकार हो जाता है, ऐसे में दंड का प्रावधान हो।

हम अपने शहर-गांव की नदियों का सफाई अभियान चलाएं। गंगा और यमुना जैसी सदानीरा बड़ी नदियों की नियमित सफाई बेहद जरूरी है। जंगलों का कटान होने से दोहरा नुकसान हो रहा है, पहला यह कि वाष्पीकरण न होने से वर्षा नहीं हो पाती और दूसरे भूमिगत जल सूखता जाता है, इसलिए वृक्षारोपण लगातार किया जाना जरूरी है।

विद्यालयों में पर्यावरण की ही तरह जल संरक्षण विषय को अनिवार्य रूप से पढा क़र रोका जाना बेहद जरूरी है, अब समय आ गया है कि केन्द्रीय और राज्यों की सरकारें जल संरक्षण को अनिवार्य विषय बना कर प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर तक नई पीढ़ी को पढ़वाने का कानून बनाए। जय भारत!

- साभार
कालनिर्णय

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

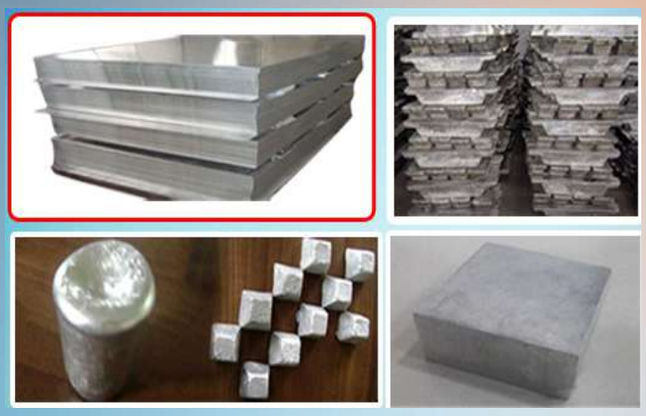

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

आजादी के बाद बदलता समाज और साहित्य और स्त्री लेखन की चुनौतियां - गीताश्री

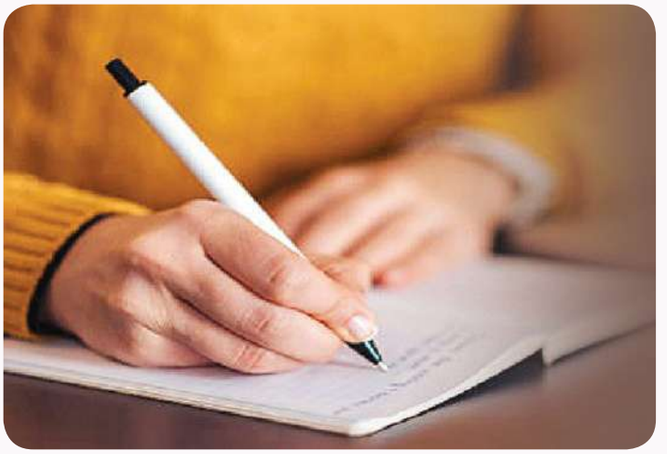

'कोई औरत कलम उठाए
इतना दीठ जीव कहलाए
उसकी गलती सुधर न पाए
उसके तो लेखे तो बस ये हैं
पहने-ओढ़े, नाचे गाए...'

--(वर्जिनिया वुल्फ)

प्रसिद्ध स्त्रीवादी लेखिका वर्जीनिया वुल्फ ने जिन दिनों औरत और कथा साहित्य विषय पर भाषण देने की तैयारी कर रही थीं तब जो उन्हें सदमा लगा होगा, उसकी सहज ही कल्पना नहीं की जा सकती है। उस समय यह विषय जितना चुनौतीपूर्ण था, आजादी के ७५ साल के बाद भी यह विषय उतना ही चुनौतीपूर्ण है। स्त्री लेखन के सामने चुनौतियां ही चुनौतियां हैं। सवालों के कटघरे हैं। आरोपों की बौछार है और खारिजों का इतिहास है।

यह बहुत व्यापक और जरूरी प्रश्न है जिससे मौजूदा समय को जरूर जूझना चाहिए। वुल्फ ने उस दौरान पाया कि औरतों को लेकर पढ़े लिखे मर्दवादी समाज की सोच बहुत घटिया थी। वे सोचते थे कि औरतों का कथा साहित्य से क्या लेना देना। उन्हें अभिव्यक्ति की न आजादी थी न मौका था, न उनके भीतर चाहत जोर मार रही थी। कमतरी का अहसास औरतों में कूट कूट कर भर दिया गया था। उस दौर के बड़े बड़े विद्वान औरतों के बारे में अपनी बहुत घटिया राय व्यक्त करते थे। पश्चिम के कुछ पुस्तकालयों में औरतों को अकेले घुसने तक की मनाही थी। औरतें जब लेखन करने लगीं तो उन्हें वहां का समाज 'लिखने की खुजली वाली कुलीना' कहकर उनका मजाक उड़ाया।

पश्चिम का समाज हो या पूरब का, पुरुष सत्ता को पढ़ी-लिखी स्त्रियों से हमेशा खतरा महसूस हुआ है। आजादी के बाद स्त्री शिक्षा पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा, ये समाज की मजबूरी थी ताकि उनके बाल-बच्चे ठीक से पले-बढ़ें, उन्हें तब अहसास कहां था कि ये पढ़ी-लिखी स्त्रियां एक दिन दुनिया बदल देंगी। आजादी से पहले जो लेखिकाएं नाम बदल कर लिख रही थी, गुपचुप लेखन करती थीं या बाला-बोधिनी बना दी गयीं थीं, वे सब अचानक से आक्रमक हुईं, सजग हुईं, वे नाम से लेखन करने लगीं। देश की आजादी ने वंचितों को सबसे ज्यादा सशक्त किया। उन्हें तब अहसास न था कि एक दिन पढ़ने से आगे निकल कर लिखने लगेंगी, शिक्षा ने उनकी चेतना को इतना जाग्रत कर दिया कि वे अपनी जुबान में बोलना और लिखना सीख गईं।

अपने भीतर की गूंगी गुड़िया को मारकर अपने लिए एक कोना तलाश रही ढीठ स्त्री ने कलम क्या पकड़ी, अपने मन का लिखना क्या शुरू किया, हलचल-सी मच गयी। जैसे ही उसने युगों युगों से सोई चेतना को जगाया, उसके आसमान को अपने मुट्ठी भर सितारों से सजाया, स्थापित मठों में खलबली मच गई, जैसे ही उसने अपने अनुभवों को अपने नए शिल्प और कथ्य में कहना शुरू किया, वैसे ही साहित्य की दुनिया में प्रश्नों के गोले चलने लगे। बाहरी दुनिया से कटी हुई औरतें सपने भी घर आंगन के ही देखा करती थीं, उनके बारे में पुरुषों ने जो लिखा, उसी से उन्होंने खुद को जाना। अपनी खोज खुद की ही नहीं, जब चेतना जागी और खुद को एक्सप्लोर करना शुरु किया तो हंगामा स्वाभाविक था, उनकी बनाई सारी छवियां ध्वस्त हो गईं, सारा फरेब सामने आ गया, कैसा महसूस किया होगा उस पहली स्त्री ने जब पन्ने पर कुछ लिखा होगा...

निर्भय तो वह तब भी नहीं रही होगी। कांपते हाथों ने रचे होंगे कुछ शब्द पहली बार.. उसकी खुशबू में नन्हें शिशु के बदन-सी खुशबू होगी, अपनी रचना को लेकर मन दहलता तो होगा, क्योंकि उसके लिए आसान नहीं अपना किला बनाना। चौखट से बाहर पैर और पन्ने पर पहली इबारत उसकी मुसीबतों का आगाज है। अपने से कमतर समझने वाले मर्दवादी समाज ने स्त्री को जैसे ही अधिक शिक्षित, तार्किक या बुद्धिमान पाया वैसे ही उसमें अंदर ही अंदर एक खतरा उत्पन्न हुआ, क्योंकि पुरुष स्वभावतः सुप्रीमो-सिंड्रोम से भरा होता है।

जब सदियों से उसने स्त्री को अपनी संपत्ति समझा है तो कैसे उसे बर्दाश्त होगा कि उससे कमतर, उसके साथ बैठकर उससे साहित्य या कला या कहानी आदि के बारे में बात करे, यानी कि जब होगा तब वह उसे खारिज करेगा, वह उसे समकालीन मुद्दों या समकालीन समस्याओं पर बात करने से भयभीत होने वाली बताएगा? वह साहित्य में कदम रख रही या साहित्यरत स्त्रियों को बौद्धिकता की कसौटी पर हराने की बात करेगा। आज स्त्री साहित्य में अपने मन की बात कहने के लिए पुरुष की अनुमति की चाह नहीं रखती, 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, 'मैं नीर भरी दुःख की बदली', से कहीं आगे आकर स्त्री अब अपने मन की आकांक्षाएं लिखने में विश्वास करने लगी है, अपने मन का आसमान रंगने लगी, तो शोर तो होना ही था।

कमाल है, नख और शिख का वर्णन किया आपने, स्त्री देह के कोने कोने को परखने के बाद अपनी रचनाओं में जी भर कर लिखा आपने, पर देह के उपयोग का आरोप लगाकर लेखन को बाधित करने का आरोप लगा स्त्रियों पर? अगर पुरुषों ने कोख के अधिकार या विवाह के बाद यौन स्वतंत्रता पर लिखा तो उन्हें आदर्श या क्रांतिकारी माना गया पर यही कोख का अधिकार अगर स्त्री अपने लेखन में करती है तो उसे समाज को तोड़ने वाली, परिवार संस्था पर प्रहार करने वाली, स्त्री के अधिकारों पर डाका डालने वाली कहा जाता है। उसे देह के आगोश में आगे बढ़ने वाली कहकर बार बार **शेष पृष्ठ २५ पर...**

पृष्ठ २४ से... हतोत्साहित किया जाता है, तब सवाल उठता है कि आखिर क्यों? आखिर क्यों बार बार स्त्री लेखन सीता की तरह अग्निपरीक्षा देती रहेगी? स्त्री लेखन पर सवाल उठाना आज सबसे आसान काम है, क्योंकि जो जागृत चेतना है उसे जब आप सहन नहीं कर सकते, और जब आप उससे मुकाबला नहीं कर सकते, तो आपको उसे दबाने में ही आपको अपना भला नजर आएगा। अगर नहीं दबा पाएंगे तो आपने अनुकूलता के लिए बहुत ही अच्छे जुमले गढ़े, 'अमुक महिला का लेखन तो स्त्री लेखन जैसा लगता ही नहीं है, यह तो एकदम पुरुष लेखन के जैसा है।' इसका अर्थ यह हुआ कि पहले तो स्त्री लेखन को आपने पहचान दी नहीं और जब पहचान दी तो उसे केवल अपने ही दायरे में बांधकर रख दिया, कथा साहित्य में इस समय लेखिकाएं बहुतायत में है, काफी लिखा जा रहा है, हर विषय पर लिखा जा रहा है, फिर भी स्त्रियों का लेखन मुख्यधारा का क्यों नहीं माना जाता? शायद अभी भी श्रेष्ठ भाव से ग्रसित स्त्री लेखन को उसी पूर्वाग्रह के नजरिये से देखते हैं कि पहला स्त्री मौलिक लेखन नहीं कर सकती और दूसरा स्त्री घर की चहारदीवारी से आगे नहीं निकल सकती। स्त्री-लेखन में पति या किसी पुरुष साथी से जोड़कर देखा जाता है, उस सृजन के लिए जो नितांत उस स्त्री का है, चूंकि स्त्री मौलिक नहीं लिख सकती है तो उसके लेखन की प्रेरणा तो कोई होगी ही न! और जब स्त्री लेखन पर यह आरोप लगता है कि वह रसोई और स्त्री पुरुष संबंधों से अलग विषयों पर नहीं लिख सकती तो यह कहा जा सकता है स्त्री लेखन में यदि दांपत्य जीवन, विवाहेतर संबंधों, पारिवारिक मूल्य, निज स्वतंत्रता आदि विषय हैं तो यह होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि इन विषयों को ही स्त्रियों ने देखा है, बचपन से भोगा है। यही तो स्त्रियों का टपकता हुआ घाव है, ऐसी कहानियां लिखकर आने वाली पीढ़ियों को सतर्क और सजग भी किया है।

स्त्री लेखन को नकारा जाना आज भी उतना ही प्रचलित है जितना पहले था, उसे पुरुषवादी मानसिकता से स्वीकृति लेनी ही चाहिए, नहीं तो घर परिवार की जिम्मेदारी उठाते हुए मजबूरन लेखिका की श्रेणी में तो डाल दिया जाता है परन्तु उसकी सफलता के लिए जब 'अमुक महिला एकदम पुरुषों-सा रच रही है' का दायरा हो जाता है तो ऐसा लगता है कि स्त्रियों का तमाम संघर्ष इसी एक पंक्ति पर दम तोड़ देता है और वर्चस्ववाद जीत जाता है।

आवश्यकता है कि अब स्त्रियां जिस प्रकार कथा, कविता में आ रही हैं उसी प्रकार आलोचना में भी आएं, आलोचना के अपने मानदंड घोषित करे, अनंत संभावनाएं हैं, स्त्री लेखन को अलग से चिन्हित करने को लेकर भी लेखिकाओं में मत-भिन्नता है, वे चाहे कितना भी प्रतिरोध जताएं कि स्त्री लेखन को मुख्यधारा के साहित्य से जोड़कर देखें, उन्हें अलग से ही चिन्हित किया जाता रहेगा, पत्रिकाओं के निकलने वाले स्त्री लेखन विशेषांक इस बात की तस्दीक करते हैं। जय भारत!

भारत को केवल BHARAT ही बोलें INDIA नहीं
जय भारत! जय भारत! जय भारत!
गढबो नवा छत्तीसगढ़

RAMPUKAR SINGH
Mob. 09993728866
MLA, Patthalgao, Raipur, Chattisgarh
Indian National Congress
A-1, Ayodhya Apartment Raipur,
Village-Mukam, Post-Patthalgao, Tehsil-Patthalgao,
Dist-Jashpur, Chattisgarh-492001

मैं भारत हूँ

साँस-साँस ये कहती है, मैं भारत हूँ।
हर धड़कन ये कहती है, मैं भारत हूँ।
झुकना नहीं जानती है ये, और सुनो।
उठी नज़र ये कहती है, मैं भारत हूँ।।

भाषा का हर शब्द कहे, मैं भारत हूँ।
कलाकार का चित्र कहे, मैं भारत हूँ।
बजती जो, माँ सरस्वती के हाथों में।
वीणा की झंकार कहे, मैं भारत हूँ।।

वंशी की हर तान कहे, मैं भारत हूँ।
कान्हा की मुस्कान कहे,मैं भारत हूँ।
मोहन से नवनीत बचा कर रख न सकी।
गोपी की तकरार कहे, मैं भारत हूँ।।

वीर पुत्र का रक्त कहे, मैं भारत हूँ।
सीमा पर बलिदान कहे, मैं भारत हूँ।
मुस्काते जो छाती पर गोली खा के।
वीरों की हुंकार कहे, मैं भारत हूँ।।

गोली की आवाज़ कहे, मैं भारत हूँ।
वीरों का अंदाज़ कहे, मैं भारत हूँ।
हर दुश्मन से लोहा मनवाए ऐसी।
सेना की ललकार कहे, मैं भारत हूँ।

परमहंस की भक्ति कहे, मैं भारत हूँ।
वीर शिवा की शक्ति कहे, मैं भारत हूँ।
हँसते-हँसते प्रिय को जो रण में भेजे।
उस पत्नी का श्रृंगार कहे, मैं भारत हूँ।।

- सदानंद कवीश्वर

यदि मुझे विश्वास हो जाये कि 'हिन्दी' राष्ट्रीय एकता में बाधक है, तो मैं 'हिन्दी' को सदा के लिए राष्ट्रभाषा पद से हटा लेने का प्रस्ताव करूँगा - सेठ गोविन्ददास

योग और इम्यूनिटी

- डॉ. नाजिया खान (आयुर्वेदाचार्य)

'योग भगाए रोग' या 'योगा से होगा' आप सबने सुना ही होगा, आजकल काफी प्रचलित है। यूं तो योग का इतिहास पांच हजार वर्ष से अधिक पुराना है, लेकिन इस कोविड-काल में लोग इसके प्रति विशेष जागरूक और आकर्षित हुए हैं, इसीलिये आजकल ऐसे प्रोग्राम्स और लेखों की बाढ़ आ गई है, जिसमें कोई चार-छह योगासन बताए जाते हैं, जो इम्यूनिटी-बूस्टर या रोग प्रतिरोधक-क्षमता बढाते हैं, जबकि 'आसन' योग के आठ अंगों में से महज़ एक अंग है। योग किसी व्यायाम का प्रकार या ब्रीदिंग टेक्नीक भर नहीं है, योग सप्त दर्शनों में से एक दर्शन है।

महर्षि पतंजलि (योग दर्शन के उपदेष्टा, योगसूत्र रचयिता) के अनुसार 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है, जैसे पानी में पत्थर फेंकने पर तरंगें उठती हैं, वैसे ही किसी बाहरी विचार रूपी कंकर से मन में भी वृत्तियां उठती हैं, इसका मतलब है कि अगर आप मन की चंचलता या गतिविधियों को स्थिर कर सकते हैं तो आप योग साध सकते हैं, लेकिन क्या यह इतना आसान है? चित्त की वृत्तियां प्राकृतिक हैं, इनबिल्ट हैं तो जो प्रोग्रामिंग प्रकृति ने की है हम उसे मिटा या हटा नहीं सकते बस क़ाबू में कर सकते हैं और यही संतुलन मायने रखता है। मनुष्य भी पशु ही है, बस कुछ वृत्तियों को अपनी बुद्धि और आत्मबल से काबू करके ही वह जंगलीपन से मुक्त हुआ है।

योग के आठ अंग हैं, इसलिये यह अष्टांग-योग कहलाता है –

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

हम जिसे योग या योगा समझते हैं, वह केवल आसन है।

'स्थिरसुखमासनम' अर्थात् स्थिर और आरामदायक अवस्था में बैठना आसन कहलाता, अतः जो अष्टांग योग साधता है, वही योगी कहलाने की अहर्ता रखता है।

अब कुछ बातें इम्यून सिस्टम या प्रतिरक्षक-तंत्र के बारे में भी समझ लें, जिस हवा में हम सांस ले रहे हैं, जिस वातावरण में हम रह रहे हैं, जो पानी पी रहे हैं, जो चीजें खा रहे हैं, असंख्य रोगाणु लिए हुए है, लेकिन क्या हम रोज बीमार पड़ते हैं, नहीं। यही इम्यून सिस्टम हमें बचाए हुए है, यह हमारा पर्सनल सुपर हीरो है। ध्यान दें, इम्यून 'सिस्टम,' होता है, मतलब समुच्चय होता है, यह कोई अकेला अवयव नहीं है और यकीन मानिये, प्रतिरक्षा-तंत्र जटिलतम तंत्रों में से एक है। जरूरी नहीं है कि हर व्यक्ति में सारे रोगाणुओं के विरुद्ध इम्यूनिटी विकसित हो ही जाए, चाहे जो भी उपाय वे कर लें, किसी-किसी में बिन अतिरिक्त उपायों के भी इम्यूनिटी मजबूत होती है, किसी में सब कर लेने पर भी विकसित नहीं होती या बहुत कमजोर होती है, साथ ही यह इम्यूनिटी भी अलग-अलग प्रकार की होती है, किसी रोग के प्रति अधिक, किसी के प्रति कम भी होती है, प्रतिरक्षा-तंत्र को काम करने के लिये बहुत संतुलन और सामंजस्य की जरूरत होती है, कोई इम्यूनिटी बूस्टर टैबलेट, सीरप, हेल्थ सप्लीमेंट, डाइट, एक्सरसाइज, योग यह दावा नहीं कर सकता कि वह आपको किसी विशेष बीमारी के प्रति इम्यून कर ही देगा, यह एक-दो दिन या सप्ताह की प्रक्रिया नहीं है और इसके बहुत से रहस्य अभी भी चिकित्सकों और वैज्ञानिकों के लिये अनसुलझे हैं।

जरुरत है कि डाइट, एक्सरसाइज, दिनचर्या, धूम्रपान, मद्यपान, नींद, उम्र, वजन, हाइजीन और आनुवंशिकी आदि का इस पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

अगर हम योग की बात करें तो सही तरह से, प्रशिक्षकों की देख-रेख में किये गए योगासन और श्वास-नियंत्रण अभ्यास, प्राणायाम और ध्यान न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अमृत हैं। योग का सम्बन्ध और महत्व केवल व्यायाम तक न सिमटकर आध्यात्मिक अधिक है, आजकल योग के तीन अंग प्रचलन में हैं – प्राणायाम, आसन और ध्यान, अगर हम इन्हें दिनचर्या में सम्मिलित करके नियमित अभ्यास करें तो ही लाभ होगा।

विशेषकर कोविड-काल में प्राणायाम बहुत ही लाभदायक है, यह फेफड़ों को मजबूत बनाता है, ऑक्सीजन का स्तर बनाए रखता है, शरीर के साथ-साथ मन को भी शांति देता है।

अगर आपने अभी शुरुआत नहीं की है या नया-नया शुरू किया है, तो सबसे पहले कपाल-भाती करें,फिर अनुलोम-विलोम, फिर अपनी शारीरिक-क्षमता, काल एवं अवस्था के अनुसार कम समय से शुरू करके धीरे-धीरे भस्त्रिका, भ्रामरी, सूर्यभेदी, उज्जायी, सीत्कारी, शीतली, योग-निद्रा, नाड़ी-शोधन आदि का अभ्यास बढाना चाहिये।

इसके बाद योगासन करना चाहिये, जैसे- भुजंगासन, मर्कटासन, मकरासन, पवन-मुक्तासन, सेतु बंधासन, वङ्क्रासन, चक्रासन, हलासन, भद्रासन, धनुरासन, अर्ध-मत्स्येन्द्रासन, गोमुखासन आदि, इसमें भी अपनी क्षमता और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

हृदय-रोग, उच्च-रक्तचाप, अल्सर, कोलाइटिस, हर्निया, जोड़ों के दर्द, किसी सर्जरी से गुजर चुके लोग और गर्भावस्था में कोई कठिन आसन न करें न ही विशेषज्ञ के परामर्श के बिना कोई आसन करें। पॉश्चर और मुद्रा सही रखने का भी ध्यान रखें। जिस प्रकार एक दिन में हम वर्ष-भर का भोजन नहीं कर सकते, उसी प्रकार महज एक दिन कोई योग-दिवस मना लेने से भी कोई बदलाव नहीं आ सकता, अतः इनका अभ्यास नियमित रखें, तभी यह इम्यूनिटी बूस्ट करने में, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करने में लाभदायक सिद्ध होगा। जय भारत!

मेरा राजस्थान

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

पधारो म्हारे देश

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

वार्षिक शुल्क 1,111/-
आजीवन शुल्क 11,111/-

मात्र रु. 100/- में, प्रति महिना

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
'मेरा राजस्थान'
पत्रिका मुफ्त

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

नीम लगायें पर्यावरण बचाये

Postal Registration Number - MCN/294/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2021-23
Published on 19th November 2022 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

भारत को 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राष्ट्रीयता, ऐतिहासिक भावना को प्रेषित करती पत्रिका

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना आपके द्वार

भारत का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर पूरे साल मैं भारत हूँ पत्रिका मुफ्त

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९.
दूरभाष- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना: www.mainbharathun.co.in

आगे भी हर महिने

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
Remove India Name From the Constitution

नीम लगायें पर्यावरण बचाये
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-२८५० ९९९९, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI No. MAHHIN/2010/48574